संस्मरण

एक वैज्ञानिक की डायरी

डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय; जन्म; ४ मार्च १६५२, शिक्षा: एम-एस-सी. लखनऊ विश्वविद्यालय), पीएच.डी. (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय-वाराणसी, नोराड (नारवे) एव अलैक्जेंडर-फान हनवोल्ट-फेलो (जरमनी), पूर्व प्रोफेसर कैंसर शोध, तबरीज़ विश्वविद्यालय, ईरान । विज्ञान कथाओं की दशाधिक पुस्तकें एवं अखिल भारतीय स्तर के प्रतिष्ठित पत्रों एवं पत्रिकाओं में अनेक विज्ञान कथाएँ प्रकाशित तथा कुछ हिब्रू बंगला में अनुवादित, पुरस्कार-सम्मान : ईरान का कैंसर शोध पुरस्कार 1978, अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट के रिसर्च बोर्ड का सम्मान 1991 विज्ञान-वाचस्पति मानद उपाधि 1996, विज्ञान-कथा-भूषण सम्मान 2001, पद्मश्री सोहनलाल द्विवेदी जन्मशती हिन्दी-सेवी सम्मान 2005, अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार रजत अलंकरण 2006, साहित्य दिवाकर (२००७, सम्पादक सरताज २००७, भारत गौरव २००७, सम्पादकश्री २००८, शान्तिराज हिन्दी गौरव अलंकरण 2008, सम्पादक सिद्धहस्त 2008, सम्पादक शिरोमणि 2011, वितान-परिषद प्रयाग सम्मान 2013, गणेशदत्त सारस्वत सम्मान (२०१३), विज्ञान परिषद् प्रयाग : सारस्वत-सम्मान 2015 आदि । सम्प्रति स्वतंत्र रूप से विज्ञान कथा लेखन । संपर्क: ईमेल : rajeevranjan.fzd@gmail.com

लेखक - सारनाथ, वाराणसी में भारतीय विज्ञान कथा लेखक समिति द्वारा आयोजित (१९-२२ फरवरी, २०००) एवं राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा प्रेरित एवं समर्थित 'संचार माध्यमों के लिए विज्ञान कथा' का अध्यक्षीय भाषण देते हुए

प्रो. डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय

मेरा जन्म चैत्र कृष्ण द्वितीया सम्वत् १९९८, तदनुसार ४ मार्च, १९४२ ई० को शीतलगंज ग्रांट में हुआ था। प्रथम पौत्र के जन्म के अवसर पर पितामह उपाध्याय चौधरी प्रभाकरेश्वर प्रसाद जी ने नान्दीमुख श्राद्ध किया था और एक सप्ताह तक उत्सव का वातावरण रहा था। नामकरण संस्कार सम्पन्न होने के उपरान्त मुझे रंजन नाम से संबोधित किया गया। कालान्तर में गोण्डा में अध्ययन प्रारम्भ करने के पूर्व राजीव से सम्मिलित हो मैं राजीव रंजन हो गया।

शीतलगंज ग्रांट के विशाल सौध के परिसर की शुद्ध वायु और वातावरण में ४ वर्षों तक क्रीडा के फलस्वरूप हृष्ट पुष्ट एवं स्वस्थ था। ५ वर्ष की अवस्था में पितामह जी ने विद्या आरम्भ कराया और फिर मैं ४ वर्षों तक उनकी उच्च सुन्दर कली नाम हथिनी पर बैठकर प्रेमघन जी के मित्र राजा उदय नारायण सिंह द्वारा स्थापित पायर की प्रारम्भिक पाठशाला में अध्ययन हेतु जाता एवं आता था। इस अध्ययन काल की एक विशेषता थी, मेरे लिए अलग टेबिल कुर्सी लगती थी और अध्यापकगण मुझे उसी स्थान पर अध्ययन कराते थे। सामान्य ग्रामीण छात्र टाट-पटियों पर बैठकर अध्ययन करते थे। यह क्रम कक्षा ४ उत्तीर्ण होने तक चलता रहा।

तदुपरान्त, गोण्डा के गांधी विद्या मंदिर जो अब उच्च माध्यमिक विद्यालय हो गया है, में पुनः कक्षा ४ में मुझे पढ़ाया गया। मैं अपने पितृव्य श्री सुरेश नारायण उपाध्याय जो गोण्डा मे वकालत करते थे, के साथ रहने लगा और दो वर्षों के अध्ययन के उपरान्त कक्षा ६ में जाकर टाम्सन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का छात्र बना। इस विद्यालय के छात्र मेरे पिता और पितृव्य रह चुके थे, इस कारण अध्यापक गण परिचित थे और मेरी अध्ययन में विशेषकर रसायन शास्त्र एवं हिन्दी में अभिरुचि देखकर उत्साहित किया करते थे । कक्षा ९ से १२ तक की अवधि में प्रतिदिन संध्या को मैं भौतिकी के प्रसिद्ध शिक्षक श्री गुरु शरण लाल जी से पढ़ने जाता था। वे अतीव सुरुचिपूर्ण ढंग से विज्ञान पढ़ाते थे। परन्तु इसके पूर्व श्री अयोध्या प्रसाद तिवारी ने कक्षा ७ से ९ के अध्ययन काल के अवधि में मेरे मानस में रसायन शास्त्र के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कर दी थी। मैने हाईस्कूल १९५७ ई० में जीवविज्ञान वर्ग से तथा इन्टरमीडियेट की परीक्षा इसी वर्ग से १९५९ ई० में उत्तीर्ण कर लखनऊ विश्वविद्यालय के कैनिंग कालेज में बी.एससी. में प्रवेश लिया था ।

हाई स्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरान्त उस युग की परम्परा के अनुसार पितामह जी ने मुझे बन्दूक चलाने की शिक्षा दी और श्री चन्द्रकान्त चाचा के साथ शिकार करते करते मैं एक अच्छा शिकारी हो गया। मेरा निशाना अचूक था। गर्मी की छुट्टियों में "ब्रंसहा की झाली" से लेकर मीलों फैले सरिता मनोरमा के तट से लगे जंगलों में जानवरों का शिकार एवं जाड़ों में "बड़ऊर-तालाब" में बाबूजी द्वारा खरीदे गये "मुक्तागज" पर बैठकर बत्तखों का शिकार करता था। यह गज इतना सधा था कि बंदूक दागते समय स्थिर होकर तैरता था और लक्ष्य की गयी बत्तखों, सुर्खाबों तथा अन्य पक्षियों को सूँड़ से पकड़कर उठाकर अब्दुल नामक फीलवान को पकड़ा देता था। क्या अविस्मरणीय दिन थे वे! शिकार का शौक अब भी है पर प्रतिबन्धों के कारण यह अवरुद्ध है। अब तो बत्तखों, हारियल, घनेयों, जंगली हिरणों एवं वाराहों को टेलीविजन में देखकर सन्तोष करना पड़ता है। मुझे शिकार की भाँति मांसाहार प्रिय है।

१५ वर्ष की अवस्था में पारम्परिक रीति के अनुसार मेरा यज्ञोपवीत संस्कार शीतलगंज ग्रांट में धूमधाम से मनाया गया। मुझे परिवार की परम्परा के अनुरूप पितामह जी ने गायत्री मंत्र की शिक्षा दी और उन्हीं के साथ बैठकर कुछ समय तक नियमित संध्योपासन भी किया था। इस यज्ञोपवीत समारोह में परिवार के सभी स्वजन सम्मिलित हुए थे तथा रीतियों का निर्वाह किया था। इस अवसर पर मीरजापुर से पं. संकष्टहरण शर्मा भी आये थे तथा मीरजापुर स्थित खरिहट ग्राम से बोरों में भरकर चिरौंजी तथा मिट्टी के वृहत् सकोरों में जमी मलायी भी आयी थी जो अपने स्वाद के कारण अविस्मरणीय है। इस अवसर पर प्रयाग से नर्मदेश्वर दादा साहब भी आये थे और आशीर्वाद दिया था।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कैनिंग कालेज में बी.एससी. की अवधि में मुझे अनेक विख्यात शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों के सानिद्ध में अध्ययन करने का अवसर मिला। वनस्पति विज्ञान में प्रो. राम उदार जो प्रो. बीरबल साहनी के छात्र थे, जीव विज्ञान में प्रो. एस.एम.दास और रसायन विज्ञान में प्रो. ए.सी. चटर्जी के लेक्चर्स सदैव प्रेरणा के स्रोत रहे। मैंने १९६१ में बी.एससी. की परीक्षा उत्तीर्ण की और अपने प्रिय विषय रसायन शास्त्र के अध्ययन हेतु वहीं पर एम.एससी. में प्रवेश लिया। उस समय यद्यपि कार्बनिक रसायन के अनेक विख्यात शिक्षक थे परन्तु प्रो. एम.पी. खरे द्वारा "नेचुरल-प्राडक्टस" पर दिये गये लेक्चर्स सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। प्रो. खरे ने विश्वविख्यात नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. टी. राइशटाइन के निर्देशन में स्विटजरलैण्ड से "प्लाण्ट ग्लाइकोसाइडस" पर पीएच.डी. की उपाधि पाई थी और वे हम युवा छात्रों के जिनकी "नैचुरल-प्राडक्ट कमेस्ट्री" में अभिरुचि थी, के प्रेरणा स्रोत थे। १९६३ ई० में एम.एससी. की परीक्षा कार्बनिक रसायन में उत्तीर्ण करने के उपरान्त कुछ काल तक विश्वविद्यालय में रसायन विभाग में शोध छात्र रहा परन्तु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में रसायन विभाग में पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ इंडियन मेडिसिन की छात्र वृत्ति पाने के कारण प्रो. श्रीनिवास मनोहर देश पाण्डेय जी की प्रयोगशाला में अतीव लगन और परिश्रम से शोध कार्य करने के फलस्वरूप मात्र २ वर्ष एवं ६ मास की अवधि में, अनेक शोध पत्रों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में प्रकाशित कर **"केमिकल स्टडीज आन जैसमिनम आरीकुलेटम-वहल लीवज"** पर १९६८ ई० में पीएच. डी. उपाधि प्राप्त कर उसी वर्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सी.एस.आई.आर. की सीनियर फेलोशिप प्राप्त करने वाला मैं अकेला पोस्ट-डाक्टोरल फेलो था ।

मेरा विवाह आजमगढ़ नगर के प्रतिष्ठित वैद्य एवं नागरिक श्री चन्द्रदत्त त्रिपाठी जी की ज्येष्ठ दुहिता के साथ १९ मई, १९६७ ई० में सम्पन्न हुआ था । इस अवसर पर श्रद्धेय नर्मदेश्वर दादा-साहब ने निम्न पंक्तियां आशीर्वाद स्वरूप लिखीं थीं :-

कोविद रंजन संग, उद्‌वाह कुमारी राधा ।
दूज चाँद लौं बाढ़े, पाय जोग अनुराधा ।।

बारातियों का स्वागत इतने भव्य ढंग से आजमगढ़ में हुआ था कि इस विवाह का सभी को स्मरण है । श्री चन्द्रदत्त त्रिपाठी जी को सभी आदर से वैद्यजी कहकर सम्बोधित करते थे। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की थी तथा आपको उस वर्ष का स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। आप महामना मदन मोहन मालवीय जी के प्रिय छात्रों में थे और मालवीय जी ने आयुर्वेद के अध्यापन के लिए विश्वविद्यालय में नियुक्त करना चाहा था, परन्तु आपने मालवीय जी से क्षमा माँग कर आजमगढ़ नगर में "ईशावस्यम्" नाम सौध में "सर्वहितकारी चिकित्सालय" की

स्थापना कर रुग्ण लोगों की सेवा जीवन पर्यन्त करते रहे । आपके यहाँ रोगियों की पंक्ति लगी रहती थी तथा आप आजमगढ़ के ही नहीं पूर्वांचल के विख्यात वैद्य थे । मालवीय जी का आप पर पूर्ण प्रभाव था और आप आजीवन खादी वस्त्र ही धारण करते रहे ।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती राधारानी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास में १९६७ ई० में एम.ए. किया और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या के विख्यात प्रो. डा. लल्लन जी गोपाल के निर्देशन में **'चरक संहिता में सांस्कृतिक सामग्री का अध्ययन'** विषय पर शोध निवन्ध प्रस्तुत कर के पीएच.डी. की उपाधि १९७१ में प्राप्त की थी। कालान्तर में इसी विषय पर आपकी पुस्तक इंडियन कौन्सिल फार हिस्टारकल रिसर्च - नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित हुई। चरक संहिता से संबंधित यह एक बहुचर्चित ग्रंथ है। वाराणसी प्रवासकाल में ही मेरी ज्येष्ठ कन्या **अजिता** का जन्म १२ अप्रैल १९६९ में हुआ था। अवध विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास में एम.ए. करने के उपरान्त इनका विवाह भारतीय नौ सेना में कार्यरत कमाण्डर **संजय चौबे** जो इलेक्ट्रानिक इंजीनियर हैं, के साथ सम्पन्न हुआ। इनकी **श्रेया** नामक ५ साल की कुशाग्र बुद्धि कन्या है।

मेरी पीएच.डी. थीसिस के परीक्षक आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, इंग्लैंड की डायसन पेरिन प्रयोगशाला के अध्यक्ष प्रो.आई.जे. इंग, एफ.आर.एस., ने मेरे शोध कार्य की प्रशंसा की थी और इसकी सराहना इलाहाबाद के रसायन शास्त्र के प्रो. डा. राम दास तिवारी ने की थी। वास्तव में जूही की पत्तियों द्वारा घाव भरने से संबद्ध मेरा शोध कार्य इस दिशा में प्रथम चर्चित प्रयास था। जूही की पत्तियों में वर्तमान एक नवीन ट्राई टरपीन की उपस्थिति ने स्पेन के कनेरी द्वीप समूह के नेचुरल प्राडक्टस रिसर्च इंस्टीच्यूट के निदेशक प्रो. एनटानियो गोंजालेज के ध्यान को मेरी थीसिस से सम्बन्धित प्रकाशित शोध पत्र की ओर आकृष्ट किया था। यह शोध पत्र प्रतिष्ठित शोध जनरल **इक्सपेरेनशिया २४, ४२१, १९६८** में प्रकाशित हुआ था।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. डा. गुरुवक्श सिंह जी, प्रो. आर. वी. उडवर्ड जो हावर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका के विख्यात नेचुरल प्राडक्टस के रासायनिक संश्लेषण के लिये विख्यात थे, तथा कालान्तर में नोवेल पुरस्कार से सम्मानित किये गये थे, के शिष्य थे तथा आपने वहीं हावर्ड विश्वविद्यालय से एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि रसायन शास्त्र में प्राप्त की थी, ने मेरे शोध कार्य से प्रसन्न हो कर मुझे विश्वविद्यालय के महिला कालेज में लेक्चरर नियुक्त कर दिया था। इस प्रकार मेरे शोध और अध्ययन का सिलसिला चलने लगा।

मेरी नेचुरल प्राडक्टस कमेस्ट्री में उच्चतर शोध करने की प्रवल इच्छा ने उस काल के विश्व के प्रमुख शोध प्रोफेसरों-वैज्ञानिकों से संबंध स्थापित करने हेतु सदैव प्रेरित किया था, इस कारण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की लेक्चररशिप मुझे पूर्ण सन्तोष न दे सकी।

इसी अन्तराल में नारवे के विख्यात **नारवेजियन इंस्टीच्यूट आफ टेक्नालोजी-ट्रोनधाइम,** की प्रो. डा. सीनोवे लियान जेनसन से मेरा पत्राचार चल रहा था और उन्होंनें मुझें अपनी विख्यात करोटिनाइडस शोध प्रयोगशाला में कार्य करने हेतु ''नोराड'' नामक फेलोशिप प्रदान कर मुझे ट्रोनधाइम आने को निमंत्रित किया। मेरे लिये यह निमंत्रण उत्साहजनक तो था ही परन्तु समस्या परिवार की एवं

विश्वविद्यालय के रसायन विभाग से त्यागपत्र देकर विदेश प्रवास की थी। मेरे गुरु प्रो. देश पाण्डेय जी ने इस ज्ञानवर्धक यात्रा को स्वीकार करने की सलाह दी इस कारण साहस एकत्र कर एक शाम को मैंने रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. गुरुवक्श सिंह जी की प्रयोगशाला में जाकर उनके चैम्वर का द्वार खटखटाया। भीतर आने की स्वीकृति पाकर मैंने उनके सम्मुख उपस्थित होकर समस्या वतायी और नारवे जाकर शोध कार्य करने के विषय में भी उनकी राय जाननी चाही। कुछ पलों तक आँखे वन्द कर के विचार करने के वाद प्रो. गुरू वख्श सिंह जी ने मुझे रसायन विभाग से त्यागपत्र देकर ट्रोनधाइम जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। मै प्रसन्न हो कर उनके कक्ष से वाहर आया और तत्काल प्रो. डा. जानसन को पत्र एवं टेलीग्राम से नोराड फेलोशिप को स्वीकार करने की और ट्रोनधाइम जाने की सूचना दे दी।

प्रो. देशपाण्डेय जी की प्रयोगशाला के सभी शोध छात्रों ने एक विदाई समारोह का आयोजन किया। मैं वावूजी, माँ एवं पत्नी से विदा लेकर वाराणसी के वावतपुर हवाई अड्डे से २३ सितम्वर १९६९ को ४ वजे के लगभग दिल्ली के लिये इंडियन एयर लाइन्स के विमान से प्रस्थान किया मेरे पास अग्रिम यात्रा का एयर टिकट उपलब्ध होने के कारण कोई समस्या न थी और मुझे २४ सितम्वर को रात्रि ६ वजे पालम अन्तर्राष्ट्रीय एयर पोर्ट से ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट द्वारा तेहरान पहुँचना था। तेहरान मे दिनभर शेरेटन होटल में विश्राम करने के उपरान्त २४ सितम्वर की रात मे मुझे स्केन्डिनेवियन एयर लाइन सिस्टम की फ्लाइट (एस.ए.एस.) से २५ सितम्वर की प्रातः नारवे की राजधानी ओसलो और फिर वहाँ से दूसरी कनेक्टिंग फ्लाइट लेकर उसी दिन मध्यान्ह में ट्रोनधाइम पहुँचना था। यह सारा कार्यक्रम पूर्णरूपेण सुनिश्चित था।

अर्धरात्रि के सूर्य के देश नारवे में

जीवन की प्रथम वायुयात्रा का अपना विचित्र रोमांचकारी अनुभव अलग ही था। सभी कुछ विलक्षण लगा। वायुयान वाराणसी से प्रस्थान कर सुनिश्चित समय पर पर पालम हवाई अड्डे पर पहुँचा और रात्रि को समय से दिल्ली-तेहरान यात्रा प्रारम्भ हुई। ईरान की राजधानी तेहरान के शेरेटान होटल में दिनभर रूकने का अवसर था। नाश्ता कर मैं टैक्सी से तेहरान विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ईराज लालेजारी, जिनसे पत्राचार द्वारा हमारा पूर्व परिचय था, से मिलने चला गया। उनकी प्रयोगशाला देखी तथा उनसे भविष्य की योजनाओं की चर्चा भी की। प्रो. लालेजारी वहुत ही शालीन वैज्ञानिक लगे। और उन्होनें मुझे ईरान में शोध कार्य के विस्तृत क्षेत्र एवं सम्भवनाओं के विषय में अवगत कराया। उनसे मिलकर तेहरान के मुख्य राजपथ की सुन्दरता का अवलोकन करता मैं होटल आया और स्वल्प आराम कर पुनः यात्रा के लिए तैयार हो गया। फ्लाइट टाइम पर, मेहरावाद एयर पोर्ट से शुरू हुई, रात्रि भर सोता जगता काफी–आरेंज जूस पीता प्रातःकाल नारवे की राजधानी ओसलो पहुँच गया। ओसलो से जव फ्लाइट लेकर मैं ट्रोनधाइम पहुँचा तो वहाँ रुक–रुक कर वर्षा हो रही थी। एयरपोर्ट के लॉज में जव मैं सामान सहित पहुँचा तो एक छोटे कद का कुछ पृथुल गौरांग व्यक्ति मेरी तरफ आया और अग्रेंजी में मेरा नाम पूछा और अपना परिचय दिया। वह मुझे अपनी फाक्सवागन कार में वैठाकर स्टूडेनविनपो मोहोलत छात्रावास में मेरे लिए आरक्षित कमरे तक पहुँचा कर शाम को ७ वजे डिनर पर चलने के लिए आमंत्रित कर गया। यही स्काटलैन्ड के वासी डा. जार्ज फ्रांसिस थे जो कुछ समय वाद मेरे अभिन्न मित्र हुये।

दूसरे दिन मैं जार्ज फ्रांसिस के साथ इंस्टीच्यूट की प्रयोगशाला में पहुँचा। वहाँ पर **प्रो. डा. जेनसन** जो, ६ फीट लम्वी गौरांग छरहरी और सुनहरे वालों वाली महिला थीं, से भेंट हुई। सामान्य औपचारिकता के वाद उसी दिन शोधकार्य की रूपरेखा वनी और २ दिनों के उपरान्त **"मेरीनकैरोटेनायडस"**

पर कार्य प्रारम्भ हो गया। सभी की भाँति मैं प्रातःकाल ८ बजे प्रयोगशाला में पहुँच जाता था, ६ बजे के काफी ब्रेक में प्रो० जेनसन के शोध परिणामो की समस्याओं पर चर्चा होती तथा वहीं संस्थान की कैन्टीन में लंच होता तदुपरान्त कार्य प्रारम्भ हो जाता। ४ बजे के टी ब्रेक के बाद हम लोग रात्रि के ८ बजे तक कार्य करते थे। इस प्रकार शोध के प्रति समर्पण का फल था अनेक शोध पत्रों का **ऐक्टा केमिका स्कैन्डनेविका** में प्रकाशन और **विख्यात कैराटिनायड वैज्ञानिक प्रो. पॉल कारर**, जो नोबेल पुरूस्कार से सम्मानित थे, के द्वारा प्रतिपादित एक विशिष्ट कैरोटिनायड की रासायनिक संरचना में संशोधन। यह शोध परिणाम मेरे लिए अतीव तोषदायी था तथा इसके परिणाम युक्त मेरा चर्चित शोध पत्र प्रो. जेनसन मेरे तथा प्रो. कारर के नामों के साथ ऐक्टा **केमिका स्कैन्डनेविका के २४, ३०५५, १९७०** अंक में प्रकाशित हुआ था।

सितम्बर मास में नारवे के शीत का प्रकोप क्रमशः प्रारम्भ हो जाता है। भीषण हिमपात तो नवम्बर से प्रारम्भ होता है और उस समय सर्वत्र घोर अन्धकार व्याप्त हो जाता है तथा धरा बर्फ के कारण श्वेत दिखती है। प्रातःकाल लोग बर्फ के नीचे छुपी हुई कारों को बर्फ हटा कर निकालते हैं। आधे घन्टे तक कार का इंजन चलाकर गर्म करने के उपरान्त फिर गन्तव्य की ओर प्रस्थान करते हैं। यहाँ की विद्युत व्यवस्था इतनी सुन्दर है कि सदैव सोडियम लैम्प सडकों को प्रकाशित करते रहते हैं तथा सभी भवन, शिक्षा एवं शोध संस्थान तथा फैक्ट्रियों आदि में बिजली के द्वारा ही तापक्रम २१°C पर रखा जाता है। सामान्यतः तेज हवा चलने पर रात्रि का तापमान शून्य से १०°C के नीचे चला जाता है, इस कारण रात्रि में बाहर निकलने के पूर्व शरीर पर गर्म कपडों की परतों से ढक के पैरों में विशेष प्रकार के जूते और मोजे धारण कर, सर पर ऊनी टोप लगाकर ही बाहर निकला जाता है। इस प्रकार का वातावरण करीब ५ मास तक रहता है। सूर्य के दर्शन नहीं होते और दिन के हल्के प्रकाश में, तथा रात्रि की ठंडक में सभी कार्य घड़ी के अनुसार होते हैं। ऐसे समय में हम लोग प्रयोगशाला से निकलने के पूर्व पर्याप्त वस्त्र धारण करने के उपरान्त ही बाहर निकलते थे।

ग्रीष्म ऋतु का आगमन अप्रैल मास से प्रारम्भ होता है। हलके लाल रंग का सूर्य इस अवधि में दिन रात दिखता है परन्तु उसकी लालिमा मई मास में कुछ बढ जाती है तथा इसी कारण इस प्रकाश से बचने के लिए ४ से ६ मास की अवधि के अर्न्तकाल में लोग कमरों की खिड़कियों पर काले परदे लगाकर सोते हैं। इस अवधि में अधिकतम तापक्रम १० डिग्री सेल्सियस का होता है तथा दौडने पर अथवा तेज चलने पर पसीना निकल आता है। नारवे, अपने इस अर्द्ध रात्रि के सूर्य के कारण ग्रीष्म ऋतु में सैलानियों से भर जाता है। इसी समय कृषि कार्य सम्पादित होते हैं, वृक्ष एवं धरा, हरीतिमा एवं सुन्दर पुष्पों से लद जाती हैं। नारवे की ६ मास की शीत के बाद ऊष्मा का अनुभव सभी को आनन्द विभोर कर देता है।

नारवे की राजधानी **ओसलो** की स्थापना १०४८ ई० में हुई थी। यह नारवे की राजधानी ही नहीं वरन् औद्योगिक नगर भी है। सुन्दर पार्कों, दुकानें और रोड-साइड कैफे, डिस्कोथेकों से युक्त, यौन उन्मुक्तताचार का केन्द्र यह नगर हैं। वैसे तो यौन उन्मुक्तता समस्त नारवे, स्वीडन, डेनमार्क, और फिनलैण्ड में व्याप्त है। ओसलो का म्यूजियम जिसमें विभिन्न प्रकार के वाइकिंग शिप, सुरक्षित हैं, दर्शनीय है तथा उसी भाँति स्वर्ग की आकाँक्षा में ऊर्ध्वगामी नग्न स्त्री पुरूषों से खचित स्तम्भ ओसलो के राष्ट्रीय पार्क का प्रमुख आकर्षण है।

बर्गेन, ओसलो के बाद नारवे का दूसरा प्रमुख नगर है जो शिप बिल्डिंग के लिए विख्यात

है। **ट्रोनधाइम** जहाँ पर विश्व विख्यात **नारवेजियन इंस्टीच्यूट आफ टेक्नालाजी** है, नारवे का तीसरा प्रमुख नगर है जो व्यापार, जहाज निर्माण और तांबे से निर्मित नीडरसोसडोमेन नामक चर्च के लिए तथा समुद्र के **सुरम्य फ्यिोरडों** के लिए विख्यात हैं।

नारवे के अन्य नगर जिनकी यात्रा मैं सप्ताहान्तों में किया करता था, में प्रमुख **स्टावंगर, ट्रोमसू,** और **आलेसुन्ड** थे। आलेसुन्ड के समीप **आस्कर** नामक सुन्दर ग्राम में फ्यिोरडों और समुद्र के पास अपने मित्र के साथ विताये गये दिन तथा मछलियों का शिकार आज भी स्मृति के पटल पर अंकित हैं।

नारवे के सभी नगरों और ग्रामों में उनकी प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। मीलों तक फैले जंगल हरीतिमा और छोटी–छोटी नदियों में मछलियाँ विशेषकर सॉलमन ट्राउट तथा समुद्र तट पर दूर तक समुद्र में बढे हुए फिर्योडस मन को वरवस मोह लेते हैं।

ट्रोनधाइम प्रवास काल में अपने एक भारतीय मित्र की सुन्दरी स्वीडिश वाना के विवाह में भाग लेने के लिए मुझे स्वीडेन के **सान्डविकन** नामक इस्पात नगर में जाने का अवसर मिला वहीं से मैनें स्वीडेन की प्रसिद्ध राजधानी स्टाकहोम की यात्रा कार से की थी। ग्रीष्म के एक सप्ताह के अवकाश में मुझे एक नारवेजियन मित्र अरलिंग हाउड के घर पर रहकर ग्रामीण परिवेश से भी परिचित होने का अवसर मिला। यहाँ पर अधिकांश कृषक घोड़ों से खेत जोतने का काम करते थे। यहीं पर एक रात्रि हम दोनों ने राइफल से ऐल्क, जो एक प्रकार का जंगली हिरण होता है, का शिकार भी किया और उसके मांस से बनाये गये विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का आनन्द भी लिया था।

आस्कर वासी अपने नारवेजियन मित्र के साथ सुदूर उत्तर **नार्थ कैप** तक की एक छोटे जहाज से यात्रा की थी। मीलों तक फैले काले रंग के उत्तरी ध्रुव सागर की याद, उसमें उठती उत्ताल तरंगें जिनके प्रभाव से डगमगाता जहाज तथा वर्फीली हवा और दिन में भी चारों तरफ फैली कालिमा का स्मरण आज भी शरीर में रोमान्च उत्पन्न कर देता है।

वर्ष १९७० समाप्त की ओर बढ़ रहा था और मेरी छात्रवृत्ति भी वर्षान्त तक ही थी । इसी अवधि में जर्मनी के हाइडिल वर्ग स्थित कैन्सर शोध संस्थान के जैव रसायन विज्ञान के निदेशक प्रो. डॉ. एरिक हेकर जिनके साथ मेरा पत्राचार काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के शोध कार्य के समय से ही बना था, उनसे फोन पर वातें हुईं और उन्होने प्रसन्नता से अपने संस्थान में **अलेक्जैन्डर फान हमबोल्ट फेलोशिप** प्रदान कर मुझे मार्च १९७१ से हाइडिल वर्ग मे आकर शोध कार्य प्रारम्भ करने के लिए कहा। इस कार्य हेतु आवश्यक पत्राचार एवं आवेदन पत्र आदि तत्काल मैनें नारवे से प्रो. हेकर के पास भेज दिये थे।

तदुपरान्त मैनें प्रो. जेनसन को जब यह सूचना दी कि मुझे अलैक्जेडर-फान-हमबोल्ट फेलोशिप मिल गयी है तो वह प्रसन्न हुईं ओर कैरोटिनानाडस के विशेषकर वीटा-करोटिन के मानव शरीर में विटामिन-ए में परिवर्तित होने की संभावना पर तथा इसके कैंसर रोधी होने की संभावना पर विचार व्यक्त किए थे, जो १९८० के दशक में वैज्ञानिकों द्वारा सत्यापित किये गये।

ट्रोनधाइम से ७ सितम्बर १९७० को अपने मित्रों जार्ज फ्रॅांसिस, आड-लाउड हुविक, अरलिंग हाउड एवं हेलगे ख्यूशन से विदा लेकर मैं ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट से हीथ्रो, इंग्लैण्ड और वहां से कनेक्टिंग

फ्लाइट द्वारा वर्मिंघम के हवाई अड्डे पर आ गया। यहाँ पर मेरे परिवार से परिचित श्री कपिलेश्वर पाठक मुझे अपने घर तक ले जाने के लिए आये थे।

इंग्लैण्ड के प्रवास अवधि में मैंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की डायसन पेरिन लैब के अध्यक्ष प्रो. डॉ. आई. जे. इंग से भेंट की। आप मेरे गुरु प्रो. श्रीनिवास मनोहर देश पाण्डेय के गुरू थे। बहुत ही स्नेह पूरित वार्तावरण में विज्ञान संबंधी चर्चा हुई और उनसे विदा लेकर मैं दूसरे दिन वरमिंघम विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में अपने एक परिचित अंग्रेज वैज्ञानिक की मास-स्पेक्ट्रास्कोपी की प्रयोगशाला में उनसे मिलने गया।

समय निकाल कर मैं स्ट्रेटफोर्ड-आन-ऐवन में स्थित **विलियम शैक्सपियर** की काटेज देखने गया तथा उसी दिन मैट्रो से पिकैडली सर्कस तथा सोहो तथा मार्क-स्पेन्सर के सुपर मार्केटों का परिभ्रमण किया। कभी-कभी मैं इस दौरान **ब्रिटिश म्यूजियम** के चक्कर लगाता **बकिंघम पैलेस** को, **ट्रैफेलगर स्क्वायर** को निहारता, रोड साइड पबों में ऐल का आस्वादन कर लोगों से बातें करता तो ऐसा लगता था ही नहीं मैं भारत से दूर इंग्लैंड में हूँ। वैसे इंगलैंड का हर व्यक्ति जो ६० वर्ष से अधिक वय का है, भारत से पूर्णतया परिचित है।

इस प्रकार लन्दन स्थित आर्ट गैलरियों में घूमते २१ दिसमवर १९७० का दिन आ गया। रात्रि में ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाइट लेकर दूसरे दिन मैं २२ दिसम्बर १९७० को प्रातः पालम एयरपोर्ट, दिल्ली आ गया। परिवार से मिलने का अपना आनन्द था। सभी लोग वाराणसी आ गये थे। मैंनें नारवे की यात्रा बाबू जी के मामा श्री राजेश दत्त पाण्डेय जो वाराणसी में फौजदारी के वरिष्ठ अधिवक्ता थे, के वरुणापुल स्थित पैतृक आवास से प्रारम्भ की थी और वापस आने पर वहीं २ दिनों रुक कर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रो. देश पाण्डेय जी आदि से मिलकर शीतलगंज ग्रान्ट के लिए परिवार सहित प्रस्थान किया।

शीतलगंज ग्रान्ट में एक मास व्यतीत करने के उपरान्त दिल्ली की यात्रा करनी पड़ी। जर्मनी जाने के लिए वीसा, फ्लाइट रिजर्वेशन कराने के उपरान्त पुनः वापस आ गया और शान्तिपूर्वक शीतलगंज ग्रान्ट में कुछ दिनों तक रह सका। इस बार मेरी पत्नी को भी जर्मनी जाना था इस कारण पुत्री अजिता की देखरेख का भार मेरी माँ और बाबू जी ने सहर्ष लेना स्वीकार किया।

— जरमनी के वह वर्ष —

मैं १० फरवरी, १९७१ को लुफ्त-हंसा-जर्मन एयर लाइन से, पालम एयरपोर्ट से रात्रि १.३० बजे की फ्लाइट लेकर प्रातः काल **जर्मनी-फ्रैकर्फट** पहुँचा तथा वहीं से ट्रेन द्वारा मैं **म्यूनिख** पहुँच गया। म्यूनिख के रेलवे स्टेशन पर **गोयथे इंस्टीस्ट्यूट** के प्रतिनिधि आये हुये थे जिनके साथ मैं जर्मन भाषा का ३ मास का कोर्स करने **प्रीन-आन-किमजी** नामक स्थान पर आ गया। यह अति सुरम्य स्थल था, तथा इसकी विशेषता थी कि कोई भी व्यक्ति यहां जर्मन भाषा को छोड़कर अन्य भाषा नहीं बोलता था। फलस्वरूप जर्मन-भाषा का ज्ञान शीघ्रता से हुआ।

इस प्रवास काल में मेरा सम्पर्क प्रोफेसर हेकर से पत्रों द्वारा बना हुआ था। जर्मन कोर्स की समाप्ति पर मैं म्यूनिख से ट्रेन द्वारा **हाइडिल बर्ग** २० मई १९७१ को पहुँचा। वहीं से मैं **जर्मन कैंसर रिसर्च सेन्टर** गया जहाँ से मेरे ठहरने के स्थान, पीटर-स्टाल जो पहाड़ी पर स्थित था, के मकान तक कार द्वारा पहुँचाया गया। मेरी पत्नी के हाइडिल बर्ग आने पर पीटर स्टाल स्थित मकान को बदल कर हाइडिल

वर्ग के समीपस्थ **डोसन** हाइमर लैण्ड स्ट्रासे पर स्थित हर-न्यूराइटर के अपार्टमेन्ट में आ गये। यहां से जर्मन कैंसर शोध संस्थान मात्र १० मिनट का पैदल रास्ता था।

जर्मन कैंसर शोध संस्थान में कार्य प्रातः ८.०० बजे से प्रारम्भ हो जाता था और स्वेच्छानुसार जो जितनी देर शाम को कार्य करना चाहे, कर सकता था। मेरा कार्यक्रम नारवे की ही भाँति था। शनिवार और रविवार परिवार तथा अन्य आमोद-प्रमोद हेतु रहते थे परन्तु कभी-कभी कार्य की अधिकता देखते हुए यह दिन भी त्याग देने पड़ते थे।

प्रो. एरिक हेकर छोटे कद के सुदर्शन व्यक्ति थे, जिनकी अंग्रेजी जर्मन उच्चारण से मुक्त नहीं थी। वे सुसंस्कृत व्यक्ति थे। सेक्स-हार्मोन के खोजकर्त्ता प्रो. डॉ. एडोल्फ ब्यूटानेन्ड जो नोबुल पुरस्कार से सम्मानित किए गये थे, प्रो. हेकर के गुरू थे। प्रो. हेकर क्रोटान-टिगलियम नामक पौधे के तेल से सर्व प्रथम कैंसर को उत्पन्न करने में सहायक **सह-कारसिनोजने-फोरबोल इस्टर समूह** के डाईटरपीन समुदाय के प्राकृतिक रसायनिक तत्वों के शोधकर्त्ता थे। इस शोध ने कैंसर रिसर्च में क्रांति सी उत्पन्न कर दी थी। मुझे भी उन्होंने इयूफोरविया समुदाय के विभिन्न पादपों से नवीन सहकासिनोजेन्स को प्राप्त करने, उनकी संरचना स्थापित करने तथा उनकी कैंसर कारी क्षमता का अध्ययन करने को कहा। यहाँ पर नारवे की सीखी माइक्रो तकनीकें, जिनके द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म मात्रा में उपस्थित रसायनिक पदार्थों का अध्ययन किया जाता है, अति उपयोगी सिद्ध हुयीं।

एलेकजेन्डर-फान-हमबोल्ट फेलोशिप की स्थापना प्रसिद्ध जर्मन अनवेषक **काउन्ट एलेक्जैन्डर फान हमबोल्ट** ने १८६० ई० में बर्लिन में की थी। समय के उतार चढ़ाव के साथ इसकी मुख्य नियमावली में अनेक संशोधन हुये, फलतः यह योरोप की आज सवसे प्रतिष्ठित विज्ञान की फेलोशिप है। इस फेलोशिप के अन्तर्गत ही मुझे सपत्नी एवं अन्य हम्बोल्ट फेलोगणों के साथ वस द्वारा सम्पूर्ण जर्मनी को घूम कर देखने का अवसर मिला था।

ऐलक्जैन्डर फान हमबोल्ट न्यास के प्रथम अध्यक्ष विश्वविख्यात भौतिक शास्त्रविद् एवं नोवेल पुरस्कार से सम्मानित **प्रो. डॉ. वरनेर हाइजेनवर्ग** (१९५३ से १९७५) थे द्वितीय अध्यक्ष प्रसिद्ध जैव रसायनज्ञ एवं नोबेल पुरस्कार विजेता **प्रो. डॉ. फोडोर लाइनेन** (१९७५ से १९७९) तथा विश्व विख्यात भौतिक विद् **प्रो. उल्फाँग पाल** (१९७९ से १९८९) जिनको भी नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है, इस न्यास के तीसरे अध्यक्ष थे। अधुना प्रो. डॉ. राइमर लुस्ट प्रख्यात ऐस्ट्रोफिजीसिस्ट हैं तथा न्यास के चतुर्थ अध्यक्ष हैं।

इस न्यास के अन्तर्गत जर्मनी दर्शन यात्रा का जो प्रोग्राम होता है वह विलक्षण है। उस कालखण्ड में जब हम लोग वहाँ थे, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी अलग-अलग विचार धाराओं का प्रतिनिधित्व करने के कारण आज की भाँति संयुक्त नहीं थे। पूर्वी जर्मनी साम्यवादी था तो पश्चिमी भाग पूंजीवाद का पोषक था, परन्तु हम लोगों को पूर्वी वर्लिन देखने का भी सुअवसर इस यात्रा में प्राप्त हुआ था।

हाइडिलवर्ग शब्द प्राचीन जर्मन भाषा में **हाइडिलपुरगा** था कालान्तर में पुरगा को विस्थापित कर वर्ग बन गया। परन्तु पुरगा शब्द का उद्‌भव संस्कृत शब्द "पुर" से है तथा यह शब्द जर्मन भाषा में इसी अर्थ का बोधक है। हाइडिल वर्ग का विश्वविद्यालय योरप का प्राचीनतम विद्या संस्थान है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना तेरहवीं शताब्दी में हुयी थी तथा यह संस्थान अपने शैक्षिक विविधता के कारण

समस्त विश्व में विख्यात है। जर्मन कैंसर रिसर्च सेन्टर जहाँ मुझे कार्य करने का अवसर मिला था, ने हाइडिलवर्ग की गरिमा को द्विगुणित कर दिया हैं।

हाइडिलवर्ग नगर का विशिष्टतम दर्शनीय स्थल है, खण्डित दुर्ग। जिसकी स्थापना ऊँची पहाड़ी पर १६ वीं शताब्दी में हुई थी और इसका विनाश १६८६ ई० में फ्रांस के सम्राट लुई-१४ द्वारा हाइडिलवर्ग को अपने साम्राज्य में मिलाने के समय हुए युद्ध के फलस्वरूप हुआ था। आज भी हाइडिलवर्ग की नगरपालिका द्वारा इस विशाल दुर्ग पर टूरिस्टों के हेतु लाइट एण्ड साउण्ड के प्रोग्राम में इस दुर्ग का इतिहास दर्शाया जाता है।

हाइडिलवर्ग नगर सरिता नेकर की उपत्यका में वसा है तथा इसी सरिता पर वना ऐतिहासिक पुल जो किले को जाने वाले मुख्य मार्ग को जोड़ता है, दर्शनीय है। इसी भाँति जहां तक पुस्तकालय जर्मन फारमास्यूटिकल संग्रहालय, साउथ एशियन इंस्टीस्यूट, पहाड़ों और वृक्षों के मध्य में स्थित **"फिलासिफेन-वेग"** (दार्शनिक मार्ग) तथा प्राचीनता और नवीनता मिश्रण मार्केट-प्लाटज एवं सिटी सेन्टर दर्शनीय है।

जर्मन यात्रा, जिसकी चर्चा मैंने की है- का प्रारम्भ २५ जून १६७२ में हाइडिलवर्ग से सर्व-सुविधायुक्त लक्जरी वस द्वारा अन्य अलेक्जेन्डर फान हमवोल्ट फेलोज, जो कि हाइडिलवर्ग में आ गये थे, के साथ यूनीवर्सिटी प्लाटज से प्रारम्भ हुयी थी। हम लोगों के टूरिस्ट गाइड हर राप, फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन तथा स्पैनिश भाषाओं में पारंगत थे।

हम लोग **कार्लसरूहे** जो जर्मनी का न्यूकिलियर रिसर्च सेन्टर है, होते हुए दोपहर में **बादेन-बादेन** पहुँचे। यह नगर ओस नदी की घाटी में वसा है और यहाँ की वाईन विख्यात है। यह नगर ब्लैक फारेस्ट से घिरा है। यहाँ का दुर्ग, कैसीनो, चर्च तथा रोमन स्नानागार दर्शनीय है। इस नगर को देखने का एक घन्टे का निर्धारित समय कव समाप्त हुआ पता न चला। जव वस का हार्न वार-वार वजाया जाने लगा तभी-सभी लोगों ने वस में वैठ कर फ्राईवर्ग के लिये प्रस्थान किया।

फ्राईवर्ग-इन-विर्सगाऊ चारों ओर से ब्लैक फारेस्ट से घिरा होने के कारण अतीव आकर्षक और टूरिस्टों का प्रिय भ्रमण स्थल है। इसका कैथ्रेडल- उसकी शीशे की ईसामसीह के जीवन से सम्बन्धित पक्षों को दर्शाती, रंगीन खिड़कियाँ, राटहाउस एवं नवीन टाउन हाल दर्शनीय हैं। इस नगर को देखने के लिए एक घंटे का समय गाइड ने दिया था इस कारण हम सभी निश्चित समय में वस में वैठकर सरिता डून्यूव के किनारे चलते हुये विख्यात कॉस्टेन्ज झील जिसे जर्मन में **"बोडेन-सी"** कहते हैं, के तट पर स्थित **कॉस्टेन्ज** नामक नगर पर पहुँचे। यह झील वास्तव में भूमि से चारों तरफ से घिरा एक छोटा समुद्र है। यह झील ८२७ फीट गहरी और २०८ वर्गमील में फैली है। यह झील विख्यात जनेवा झील से थोड़ी ही छोटी है परन्तु इसकी समुद्र तल से १२६५ फीट की ऊँचाई इसे जाड़ों में अपेक्षाकृत गर्म रखने के साथ-साथ सैलानियों का प्रिय स्थल भी वनाती है।

कान्स्टेन्ज नगर १४१४ ई० से ही ईसाई धर्म के प्रचार का गढ़ रहा है। इस कारण इसके दुर्ग में ११ वीं शती से लेकर १४ वीं शती तक के ईसाई धर्म प्रचारकों, उनके प्रतीकों तथा धर्म संवन्धी अनेक चिह्नों व संकेतों का प्रचुरता से अंकन हुआ है। कॉस्टेन्ज की झील में हम सभी "फेरी" पर सवार होकर झील के मध्य में जाकर इसकी विशालता का अनुभव कर दोपहर का लन्च उसी "फेरी" पर लिया। लंच सदैव की भाँति विशुद्ध जर्मन था, वाइन और वियर की प्रचुरता थी, उसी भाँति मेश्ड-पोटेटो,

वाइनर-शिन्टशिल, सलाद, पनीर और ब्रेड की वहुतायत थी। साथ में सम्मिलित थीं विविधि प्रकार की सासेज। हम सभी ने वस में वैठ कर, लंच समाप्त होने के वाद **"गारमिश पार्टेन किर्शेन"** के लिए प्रस्थान किया। यह नगर अपने सुन्दर भित्ति चित्रों के एवं स्की-फील्ड होने के कारण, शीतकालीन खेलों के लिए विख्यात है। इस शीतकालीन क्रीड़ा का प्रारम्भ जनवरी से और अन्त अप्रैल में होता है। हम लोगों ने यहाँ से प्रसिद्ध चर्च जो १६ वीं शती केगोथिक स्थापक का प्रतीक है, को देखते हुए दूसर सुरम्य नगर **ओवेरमेरगाऊ** की ओर वस द्वारा, प्रस्थान किया। यहां के सुन्दर दुर्ग लिन्डरहोफ को देखकर हम लोग रात्रि विश्राम हेतु होटल गारमिश पार्टेन किंशेन में लौट आए। यह टूरिस्ट होटल पूर्ण सुविधायुक्त एवं सुरूचिपूर्ण सुन्दर कक्षों युक्त था।

दूसरे दिन प्रातःकाल ब्लैक कॉफी, ब्रेड, जैम, चीज एवं शहद युक्त जलपान कर हम, हम वोल्ट फेलोगणों की वस सुन्दर वेवरियन प्राकृतिक दृश्योयुक्त पर्वतों और जंगलों से चलती हुई, दोपहर को **फ्यूजन** नामक नगर जो शिलर सी (झील) के समीप वसा है तथा अपनी प्राकृतिक संपदा से युक्त मनमोहक सुरम्य स्थल है, में दोपहर का लन्च लेकर आस्ट्रिया के विश्व प्रसिद्ध नगर **साल्जवर्ग** पहुँचें। यहां पर रात्रि विश्राम की व्यवस्था होटल साल्जर्ग में थी। साल्जवुर्ग अपने सुन्दर वरोक स्थापत्य के कारण यदि विख्यात है तो इस नगर को योरप के विश्व विख्यात संगीतज्ञ **मोर्जाट** के जन्म स्थली एवं संगीत साधना केन्द्र होंने का गौरव भी प्राप्त है। इसी सुन्दर नगर में होटल में थोड़ी देर विश्राम कर हम सभी निर्धारित समय पर साल्जवुर्ग के प्रसिद्ध रेस्ट्रा में रात्रि भोजन हेतु एकत्र हुए। इस भोजन में "गुलाश" और विख्यात साल्जवुर्ग की वाइन की महक और गुलाश का स्वाद आज भी स्मृति में सुरक्षित है। गुलाश भारतीय व्यंजन "रोगेन-जोश" की भाँति है, परन्तु इस पर तुर्की एवं योरप के प्रभाव के फलस्वरूप लालमिर्च का स्थान कालीमिर्च ने लेकर इसे और सुस्वादु वना दिया है। भोज समारोह रात्रि के १२ वजे तक चलता रहा।

दूसरे दिन प्रातः ८ वजे ब्लैक काफी, टोस्ट, शहद, पनीर, मक्खन एवं आरैंज जूस पीकर हम लोग म्यूनिख की तरफ जाने वाले योरोपा १३२ राजपथ पर वढ़ चले। यहीं से थोड़ा आगे वढ़ने पर प्रसिद्ध **न्यूराइनस्टाइन** नामक सुन्दर किला है जो दक्षिण जर्मनी की सुन्दरता में चार चाँद लगाता है। ऊँची पहाड़ी पर स्थित सफेद और सुनहरे रंगों में रंगा यह किला चारों तरफ से घिरा हुआ आकाश को छूता प्रतीत होता है। इस किले के सभी कक्ष विविध रोमांटिक आख्यानों को चित्रित करती हुई दीवारों और पेंटिंगों द्वारा इस प्रकार सजाई गई है कि दरवाजों और खिड़कियों की वास्तविक स्थिति जान पाना कठिन हो जाता है। इस दुर्ग के कक्षों के चित्र अनेक विख्यात चित्रकारों द्वारा वनाये गये हैं। दक्षिण जर्मनी के इस ऐतिहासिक सौन्दर्ययुक्त किले का निर्माण ववेरिया के राजा लुडविंग-द्वितीय द्वारा कराया गया था। इसी सौन्दर्य एवं संगीत प्रिय नृप ने प्रसिद्ध **संगीतकार वैगनर** को भी संरक्षण प्रदान किया था।

इस किले की यात्रा से नीचे उतरने के उपरान्त एक बार पहाड़ की चोटी पर स्थित इस दुर्ग का पुनरावलोकन कर हम लोगों ने **डाखऊ** नामक स्थान जो म्यूनिख से २२ किलोमीटर पहले पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित है, के लिए प्रस्थान किया। प्राचीन डाखऊ ग्राम एक प्राचीन जर्मन किले के समीप बसा सुरम्य स्थल था, जिसको योरप के अनेक चित्रकारों ने तूलिका द्वारा अमरता प्रदान की थी। परन्तु हिटलर के उदय के साथ और यहूदी विरोधी होने के कारण इस सुन्दर स्थल का स्मरण आज लोगों के मानस में भय उत्पन्न कर देता है। इसी स्थान पर १६३१ में जर्मनी के वासी यहूदियों के सामूहिक संहार हेतु प्रथम **कंसट्रेशन कैम्प** का निर्माण हुआ था जिसके वाथरूमों में लगे शवर और टोंटियों के खोलने से पानी

के स्थान पर जहरीली गैस निकल कर उनके प्राणों का अन्त कर देती थी। डाखऊ अब द्वितीय विश्व युद्ध नें वर्बरतापूर्वक मारे गये यहूदियों के स्मृति चिन्हों, उनके नामों, वस्त्रों आदि को संजोये एक संग्रहालय में परिवर्तित हो गया है, जो आज भी चारों तरफ से नाजियों द्वारा निर्मित वाच-टावरों और कटीले तारों की बाउण्ड्री से घिरा है। डाखऊ का स्मरण द्वितीय विश्व युद्ध में नाजियों द्वारा योरप में यहूदियों पर हुए अत्याचारों का दुखद, त्रासदायक एवं भयावह स्मरण है। डाखऊ दर्शन पूरा कर हम लोग जर्मनी के विख्यात नगर म्यूनिख पहुँचे।

म्यूनिख दक्षिण जर्मनी में वर्वेरिया प्रान्त की राजधानी है ओर अपने वायरिश-फेस्ट समारोह जो अक्टूवर में मनाया जाता है, के लिए विख्यात है। यहाँ की जर्मन भाषा और हाइडिल वर्ग में उच्चारित होने वाली जर्मन में अन्तर स्पष्ट दिखता है। म्यूनिख नगर की स्थापना ६ वीं शती में हुई थी तथा समय के साथ इसका विकास एवं विनाश भी होता रहा है। आज यह ऐतिहासिक नगर बियर निर्माण केन्द्र ही नहीं वरन् एक औद्योगिक नगर भी है।

म्यूनिख भ्रमण मैरियन प्लाट्ज से प्रारम्भ हुआ, यहीं के एक रेस्ट्रा में लंच का आयोजन था। विविध व्यंजन, वाइन तथा ब्लैक वीयर एवं उंस्ट (नमकीन-गोल ब्रेड) जो इस क्षेत्र की विशेषता है, इस भोजन का आकर्षण थी।

हम लोगों ने विशिष्ट ववेरियन स्टाइल में निर्मित पुराना टाउन हाल तथा नया टाउन हाल देखकर ओल्ड पिनाकोथे को देखने गये। यह विशाल भवन में योरप के अनेक चित्रकारों के चित्रों से सुसज्जित है। इन विविध चित्रों में **अल्ब्रेश्ट डूरर** (१४७१-१५२८) **हास म्यूनिग** (१५१६-१५७३) **ल्यूकास कारनाथ** (१४७२-१५५३) की "क्राइस्ट आन क्रांस", **रोगर फान डेर वडिन** (१४००-१४६४) की "थ्री किंगस" **रामब्रे डस** (१६०६-१६६६) की एब्रहीम एण्ड दी होली फेमिली, **रूबेन्स** (१५७७-१६४०) की लास्ट जजमेन्ट आदि अनेक चित्रकारों की कृतियों को देखते हुए हम लोगों ने चर्च आफ आवर लेडी जो १८२१ में निर्मित हुआ था, को देखते, सराहते, नेशनल म्यूजियम में सुरक्षित अनेक आभूषणों मूर्तियों, फर्नीचरों, वस्त्रों एवं राजकीय परिधानों, सोने चाँदी के पात्रों को देखते हुए थक गये थे।

काफी पीकर थकान दूर कर हम लोगों ने समीप स्थित १६६४ में निर्मित **निम्फेनवर्ग कैसेल** को देखने हेतु प्रस्थान किया। रात्रि के विद्युत प्रकाश में यह किला वास्तव में परियों का किला लगता था।

निम्फेनवर्ग का दुर्ग बवेरिया के राजाओं का ग्रीष्म कालीन आवास था । इस पाँच मंजिले दुर्ग का निर्माण १६६४ ई० में प्रारम्भ हुआ था तथा यह निर्माण इटेलियन स्थापत्य से प्रभावित है ।

रात्रि म्यूनिख में विश्राम कर दूसरे दिन हम लोग **आउगसबर्ग** की यात्रा पर चल पड़े । इस नगर का चर्च एवं फयूगेराई दर्शनीय है । फयूगेराई का निर्माण १५१६ ई० में फयूगर दि रिच् ने गरीबो के हेतु कराया था । यहाँ पर निर्धनों को सभी प्रकार की निःशुल्क सहायता दी जाती थी। यहाँ के दर्शनीय टाउन हाल को देखकर, स्मृतिचिन्ह हेतु एक वियर मग, खरीद कर हम लोगो ने उल्म के लिए प्रस्थान किया।

उल्म नगर सरिता डेन्यूब के तट पर बसा है । यात्रा में वियर और वाइन पीते-पीते मै औंर मेरी पत्नी ऊब चुकी थी, इस कारण जब उल्म के विशाल गोथिक चर्च के समीप पर लगे नल से सरिता डेन्यूब के जल को गिरते देखकर पूछने पर यह पता चला कि जल पीने योग्य है, तो हम दोनो ने तृप्ति

हो कर इस जल का सेवन किया। कैमरे से इस जल के पान का चित्र खींच कर, यह अनुभव जर्मनी यात्रा के भाँति ही हम दोनो के लिए अविस्मरणीय वन गया।

उल्म चर्च गोथिक स्थापत्य का विश्व का सवसे वड़ा एवं ऊँचा चर्च है । यह गगन चुम्बी ५२८ फीट ऊँची रचना अपने नुकीली चोटियों तथा इस चर्च पर जाने वाली सुन्दर सीढ़ियो के कारण अतीव दर्शनीय है। इसी उल्म नगर में विश्व विख्यात भौतिकविद्, क्वांटम थ्योरी के प्रतिपादक **डॉ. अलबर्ट आईन्सटीन** का जन्म १८७६ में हुआ था। नाजी जर्मनी में यहूदियों के प्रतिरोध के कारण उन्हे जर्मनी छोंड़ कर प्राण रक्षा हेतु अमेरिका चला जाना पड़ा था। सरिता डेन्यूव के किनारे की प्रसिद्व रोमान्टिक रोड से होते हुए हम लोग दोपहर में **न्यूरेनबर्ग** पहुँचे।

इसी नगर में यहूदियों की हत्या में लिप्त पाये गये हिटलर समर्थक नाजीयों को अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में सजा सुनायी थी । यहाँ पर मुख्य मार्केट में स्थित २२ फीट ऊँची एवं वाइविल के साथ नायकों की प्रतिमा युक्त झरना और उसके मध्य से निकली जल धारा अतीव आर्कषक है । गोथिक स्थापत्य में निर्मित १४ वीं शताब्दी की यह रचना अतीव सुन्दर है । इसी नगर के मुख्य मार्केट में स्थित है 'लीवेनफ्राउऐनकिर्शे जिसे अंग्रेजी में चर्च आफ आवर लेडी कहते है । इस सुन्दर गोथिक स्थापत्य के चर्च की विषेशता दिन के १२ वजे देखने को मिलती है जव इसकी विशाल घड़ी का द्वार खुलता है और वाइविल के सेविन एलेक्टर्स सम्राट कार्ल-४ का नमन करतें है । इस विलक्षण कृति को देखकर हम लोगो नें समीपस्थ **वैमबर्ग** नगर को देखने हेतु प्रस्थान किया । यहाँ का गोथिक चर्च ओल्ड रेजीडेंस तथा प्राचीन टाउन हाल को देखते हुए हम लोगों की वस नें **उर्जबर्ग** की तरफ प्रस्थान किया । यहाँ के राज्य प्रासाद के कक्षों की उभरी दीवाल पर वेनिस के विख्यात चित्रकार **टीपोलो** द्वारा १७५३ ई० में की गयी चित्रकारी जो ईसामसीह के जीवन के विभिन्न पक्षों को दर्शाती है, को देखते हुए, प्रासाद में सुरक्षित अन्य सामग्रियों का अवलोकन करते हुए हम लोग यहाँ के विलक्षण चर्च को देखने पहुँचे । इसकी सुनहरे रंग से की गयी नक्काशी अर्ध चन्द्राकार मेंहरावे तथा भीतर के कक्षों में टीपोलो की विख्यात चित्र रचना- दि एजम्पशन और 'फाल आफ ऐंजिल्स को देखकर दोपहर का लन्च जिसमें राइन क्षेत्र की प्रसिद्व मदिरा भी दी गयी थी , का रसास्वादन कर हम लोग शाम को **फ्रैंकफुर्ट आम मेन** पहुँचे ।

फ्रैकफुर्ट नगर वैंकरो का नगर हे । यहाँ पर प्रसिद्व व्यवसायी राथेशिल्ड (१७४४-१८१२) का परिवार रहा है जिसके व्यापार की शाखायें सारे पश्चिमी गोलार्ध में फैली है । फ्रैकफुर्ट में ही प्रसिद्व जर्मन साहित्य के रचयिता **जोहानन उल्फगांग फान गोथे** का जन्म २८ अगस्त १७४६ में हुआ था । उनके मकान को देखकर वाहर से गोयथे म्यूजियम को देखते हम लोग १४ वीं शती में निर्मित चर्च को देखकर कोंबलेंज के लिए प्रस्थान किये ।

कोंबलेंज सरिता मोजेल एवं राइन के तट पर वसा होने के कारण अपने 'वाइन-ग्राम' जिसे जरमन में 'वाइन डोनर्फ' कहा जाता है , के नाम से विख्यात है । यह नगर द्वित्तीय विश्व युद्व में पूर्णरूपेण नष्ट हो गया था, परन्तु इसके पुनर्निर्माण ने इसे प्राचीन गरिमा पुनः प्रदान कर दी । यहाँ की सुस्वादु मदिरा को चखने के वाद हम सभी यहाँ का चर्च एवं सिटी सेन्टर देखकर २७ जुलाई १६७१ को तीन वजे दिन में **बोन** पहुँच गये। **बोन स्थित अलेक्जैन्डर फान हमबोल्ट न्यास के भवन में जो प्रोग्राम हुए थे, उनकी रूपरेखा निम्न है :-**

१७ बजे : न्यास के जनरल सेक्रेटरी डा. हेनरिख पाइफर द्वारा बीथहोवेन हाल में सम्बोधन
१८ बजे : पियानो कन्सर्ट-इसीडोरो वैरिओ-नावारो द्वारा, स्पेन के संगीतज्ञ एवं न्यास के छात्र
१९ बजे : सम्मलित भोज

बुधवार २८ जुलाई १९७१

१० बजे : प्रोफेसर डा. हाइजीनवर्ग-न्यास अध्यक्ष का भाषण प्रोफेसर डा० होरेस्ट का जर्मन थियेटर एवं उसका विकास भाषण
१२:३० बजे : जहाज द्वारा सरिता राइन में यात्रा तथा दोपहर का भोजन
१८ बजे : कल्चलर तथा अन्य प्रोग्राम
२० बजे : मैरियोनिटेन थियेटर में कठपुतली नृत्य , स्टूट गॉड के प्रसिद्ध कलाकार एलवस्ट रोजर द्वारा

वृस्पतिवार २९ जुलाई १९७१

१० बजे : प्रोफेसर डा. रूडोल्फ हाइलेवेस्ट का भाषण
१२ बजे : सामूहिक भोज वीथहोवेन हाल में
१५:३० बजे : प्रोफेसर डा. हान्स ल्यूसिक - केन्द्रीय मंत्री इंजीनियरिंग एवं विज्ञान, का भाषण
१७:३० बजे : सामूहिक भोज वीथहोवेन हाल में
२० बजे : प्रोफेसर डा. वरनेर हाइजेनवर्ग से भेंट मुलाकात वीथहोवेन हाल के विशेष कक्ष मे

शुक्रवार ३० जुलाई १९७१

९ बजे : नगर दर्शन, म्यूजियम एवं ब्रुहेल दुर्ग की यात्रा, रेडियो टेलीस्कोप भवन की यात्रा .महिलाओं का कार्यक्रम- इस प्रोग्राम में न्यास के जनरल सेक्रेटरी के साथ हुई फोटोग्राफी में मेरी श्रीमती जी का चित्र बोन के समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था।
१३ बजे : सामूहिक भोज तदुपरान्त प्रस्थान।

हम लोगो की बस क्योलन एवं डूसेलडोर्फ होते हुए मुन्स्टर की ओर प्रस्थान की।

क्योलन नगर राइनलैण्ड नामक जर्मन प्रदेश की राजधानी है तथा प्रसिद्ध औद्योगिक नगर भी। द्वितीय विश्व युद्ध में नष्ट हुए इस नगर के पुर्ननिर्माण में १५ वर्ष लगे थे , परन्तु आज उस विनाश के चिन्ह कहीं दिखायी नहीं देते। इस नगर से चलते हुए हम लोग **डुसेलडोर्फ** पहुँचे । यह नगर जर्मनी का प्रमुख स्टाक इक्सचेंज का केन्द्र है तथा अनेक उद्योगों का जन्मदाता भी । यहाँ का फैशन केन्द्र विश्व विख्यात है । यहाँ के किले को देखते हुए हम लोगो की वस **ओनसाब्रुक** होती हुई **ब्रेमेन** पहुँची । दोपहर का लन्च लेकर हम लोग ब्रेमेन को देखने निकल पड़े।

ब्रेमेन नाविकों का नगर है । इस कारण हैम्वर्ग के वाद यहाँ समुद्र से आये जहाजो के सामानो से यह शहर भरा रहता है । हम लोगो ने यहाँ का सिटी सेन्टर टाउन हाल एवं चर्च देखकर श्री म्यूजीकान्टेन (तीन संगीतज्ञ) का स्मृति चिन्ह खरीद़ने के उपरान्त हैम्वर्ग के लिए प्रस्थान किया ।

हैम्बर्ग जर्मनी का वर्लिन के बाद दूसरा विशाल नगर है यह सी-पोर्ट तो है ही साथ ही साथ यह समाचार पत्रों आदि के प्रकाशन का प्रमुख स्थल भी है। यह पूर्णतया औद्योगिक नगर है जो विभिन्न प्रकार के आमोद प्रमोद के साधनों से भरा है। यहाँ के सेन्ट पाउली में रात्रि की रंगीनियो का आनन्द है तो दूसरी तरफ रेस कोर्स, डांसिंग हालो, कसीनो एवं विविध प्रकार के बार और कैफे इस नगर में

भरे पड़े है।

रात्रि विश्राम हैम्बर्ग में करना था, इस कारण हम लोगों ने यहाँ का मुख्य केन्द्र सेंट माईकेल का चर्च देखकर कुछ घन्टो के लिए जहाज द्वारा समुद्र की सैर कर यहाँ का मसालोयुक्त सूप, मिसंड मीट, पोटैटो पूरी और वियर पीकर रात्रि विश्राम की तैयारी की ।

हम लोग **लूनेबर्ग** कों देखते हुए **सेले** नामक उत्तरी जर्मनी के शहर में आये। यहाँ का पुराना चौक टाउन हाल और किले को देखते हुए हम लोगों की बस वर्लिन के लिए प्रस्थान कर गयी। दोपहर का भोजन **ब्रुन्सविक** में हुआ इसी वीच आधे घन्टे के समय का उपयोग इस नगर के केन्द्र को देखने में लगा। वर्लिन की यात्रा लम्बी थी हम लोग शाम को बर्लिन पहुँचे। उस समय **बर्लिन** विभाजित नगर था परन्तु आज यह नगर एक वार पुनः जर्मनी की राजधानी है। वर्लिन पहुँच कर हम लोग होटल में जाकर स्वस्थ, होकर भ्रमण हेतु निकल पड़े। वर्लिन एक प्रकार से सुन्दर उपवनों, चौड़ी वीथिकाओं और उच्च अट्टालिकाओं का नगर है। हम लोगों ने कुरफुरस्टेनडाम जो नियान लाइट में अति सुन्दर लगता है, के द्वितीय विश्व युद्ध में खंडित जर्मन सम्राट कैसर विल्हेल्म -१ के स्मृति में १८६५ ई० में बने चर्च को देखकर जर्मनी की अभिशप्त दीवाल जो पूर्वी ओर पश्चिमी जर्मनी को विभाजित करती थी, को देखते हुए विख्यात ब्रैन्डेनवर्गतूर -द्वार को देखने गये। यह ६ विशाल डोरिक स्थापत्य युक्त स्तम्भों पर टिकी सुन्दर रचना है जिसका निर्माण लैंगहान वंशजो द्वारा १७८६ में किया गया था। यह जर्मनी की महानता का प्रतीक था। यहीं पर रेस्ट्रा में खाना खाकर हम लोगों ने विश्व विख्यात वर्लिन - फिलहार्मोनिक आरकेस्ट्रा के भवन को देखा । रात्रि में घूमते टहलते १२ बज चुके थे इस कारण वर्लिन दर्शन को विराम देना आवश्यक था।

दूसरे दिन प्रातः हम लोग फेडरिक स्ट्रासे पर स्थित पूर्वी वर्लिन के **चेक-प्वाइंट चार्ली** नामक स्थान से पूर्वी वर्लिन के क्षेत्र में प्रवेश किए तथा उन्टर-डेन लिन्डेन के दोनों तरफ सुन्दर सुगंधित नीबू के वृक्षो से उड़ती सुगन्ध में डूब गये । इस विख्यात राजपथ के दोनो तरफ संग्रहालयो और **अलेक्जैन्डर फान हमबोल्ट विश्वविद्यालय** के भवन है । इस विश्वविद्यालय की स्थापना १८१० ई० में हमवोल्ट वन्धुओं द्वारा की गयी थी एवं आज उनके सम्मान में उनकी एक प्रतिमा इस विश्वविद्यालय के सम्मुख लगी है।

हम लोगो ने ट्रेप्टोपार्क सोवियत स्मारक जो कि लाल संगमरमर पत्थरों की रचना है तथा द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए (बर्लिन के युद्ध में) रूसी सैनिकों के स्मारक का अंश है को देखकर परगेनान म्यूजियम में गये । यहाँ के इस संग्रहालय में बैवोलियन सभ्यता से सम्वन्धित संग्रहित सामग्रियों को, देवी इस्थर के स्तम्भ जो वृषभों, सिंहों और अन्य जीवों की रचनाओं से घिरे है, को भी देखा। इसी संग्रहालय में पौरुषयुक्त ग्रीक देवता जीयस की आकर्षक प्रतिमा को भी देखने का अवसर मिला। तदुपरान्त हम लोग कार्ल मार्क्स ऐले पर विचरण करते हुये प्लाटज डेर एकाडमी पर संसार की सभी भाषाओं में लिखे 'अ' शब्द को देंखा। दोपहर के समय हम लोग पुनः चेक प्वाइंट चार्ली से पश्चिमी वर्लिन में आ गये। भोजन कर हम लोग सार्लटनवर्ग कैसेल और म्यूजियम में रखी मिस्र की साम्राज्ञी निफरतिति की ममी देखी । शाम हो गयी थी। वर्लिन से प्रस्थान कर गोटिनजन, कैसेल, फुल्दा होते हुए हम लोग सारी रात जगते सोते प्रातः काल, १५ दिनों की यात्रा समाप्त कर हाइडिलवर्ग पहुँचे। यात्रा की थकान भी हम लोग महसूस कर रहे थे। इस कारण दो दिनों के बाद पुनः प्रयोगशाला संवंधित कार्यों को प्रारम्भ करना निश्चित किया । अलेक्डेन्डर फान हमबोल्ट न्यास अपने समस्त फेलोगणों से जो विश्व

भर में फैले हुए है, से पत्राचार सूचनाएं और न्यास की पत्रिका एवं विशिष्ट जर्मन डायरी द्वारा, वर्ष भर सम्पर्क बनाये रखती है। यह अपने तरह का विशिष्ट जर्मन सम्पर्क माध्यम है।

· प्रो. हेकर की जैव रसायन की प्रयोगशाला में कार्य के फलस्वरूप अनेक शोध पत्रों का प्रकाशन हुआ। इनमें से सबसे विशिष्ट शोध पत्र था, जिसमें सर्वप्रथम एक नये प्रकार की क्रिपटिक-कोकारसिनोजेन की खोज की चर्चा की गयी थी । इस शोध पत्र में मैने सर्वप्रथम प्रो० हेकर के सहयोगियों द्वारा प्रमाद वश त्याग दिये एक सूक्ष्म तथ्य की ओर ध्यान दिलाया था, जिसके परिणाम स्वरूप इस नवीन प्रकार के कैंसरकारी पदार्थ की खोज हो सकीं। इसके कारण प्रो० हेकर को अपने पूर्व प्रकाशित परिणामों का इस नवीन शोध की दृष्टि से पुनर्मूल्यांकित करना पडा और अपने संशोधित तथ्यों के प्रकाशन के उपरान्त ही उन्होने मेरे इस नवीन तथ्यों से युक्त शोध पत्र में निहित तथ्यों को १६७४ में **फाइटोकेमेस्ट्री १५, १०७०, १६७६** प्रकाशित किया। इस प्रकार की स्पर्धायुक्त विशिष्ट जर्मन मानसिकता का प्रथम प्रत्यक्ष अनुभव मुझे हाइडिलवर्ग में हुआ था। हाइडिलवर्ग प्रवास की अवधि में ही मेरा सम्पर्क प्रो. फागीह जो विश्व स्वास्थ्य संगठन में ईरान के प्रतिनिधि थे तथा ईरान में शोध को प्रोत्साहन देने हेतु विदेशी वैज्ञानिकों का चयन करने जर्मन कैंसर रिसर्च इंस्टीटयूट में आये थे, से हुआ। उन्होंने मेरा चुनाव तबरीज विश्वविद्यालय में कैंसर शोध के प्रोफेसर के पद हेतु किया तथा मुझे इस विश्वविद्यालय में आकर कार्य प्रारम्भ करने हेतु नियुक्ति पत्र दिया था।

मैने जर्मन कैंसर शोध संस्थान के सहयोगियों डा. स्वाइजर, डा. हरगेनहान, डा. फुंस्टनवर्गर, डा. मरीना रैंजिया आदि से विदा लेकर २८ जनवरी १६७३ में जर्मन एयर लाइन - लुफत-हन्सा से भारत के लिए प्रस्थान किया। उसी दिन मेरे प्रस्थान के एक घन्टे के बाद मेरी पत्नी भी एयर इण्डिया की उड़ान लेकर पालम-दिल्ली आ गयीं। गोरखपुर विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में कुछ काल के लिए वैज्ञानिक पूल स्वीकार कर तथा हमारे पुत्र **आदित्य नारायण उपाध्याय** के १८ दिसम्बर १६७४ के जन्मोपरान्त, जो आज फैजाबाद के **उदीयमान अधिवक्ता** हैं ; मैं २४ दिसम्बर १६७४ को दिल्ली के पालम एयर पोर्ट से बम्बई तथा वहाँ के ताज इन्टरकान्टीनेन्टल होटल में एक रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन ईरान एयर की फ्लाइट से मध्यान्ह में २५ दिसम्बर १६७४ में तेहरान के परिचित मेहराबाद एयरपोर्ट पहुँच गया। यहाँ से पुनः फ्लाइट लेकर मैं तबरीज एयरपोर्ट पर जब उतरा तो वहाँ मुझे लेने के लिए फारमेसी फैकेल्टी के लोग आये थे। उन्होंने मुझे तबरीज के इन्टरनेशनल होटल में ठहराया। दूसरे दिन विश्वविद्यालय की कार से फारमेसी फैकेल्टी पहुँचा जहाँ पर मुझे पता चला कि प्रो. फागीह विश्वविद्यालय के चांसलर है। फैकेल्टी के सदस्यों से मिलता हुआ ज्वाइनिंग रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने के उपरान्त जब मै प्रो. फागीह से मिलने उनके आफिस में गया जहाँ पर वे बड़े स्नेह से मिले। मेरे विलम्ब से आने का कारण पूछने पर मैने उन्हे तथ्यों से अवगत कराया तथा उनसे शोध की चर्चा करते ही उन्होने मुझे कैंसर शोध प्रारम्भ करने तथा प्रयोगशाला स्थापना करने के हेतु सभी प्रकार के सहयोग के लिए आश्वासन दिया। समस्या उत्पन्न होने पर उन्होंने सीधे सम्पर्क करने के लिए भी कहा। परिणामस्वरूप मेरी प्रयोगशाला मात्र ६ मास की अवधि में विविध उपकरणो से युक्त होकर अन्तरराष्ट्रीय स्तर की हो गयी। इस कार्य में विभाग के डीन डा. हसन मोहसनी का विशिष्ट योगदान था। शोध छात्रों को शोध की ओर उन्मुख करने हेतु तथा कैंसर सम्बन्धी सूचनाओं एवं शोध जर्नलों को उपलब्ध कराने में संस्थान के पुस्तकालय की अध्यक्षा खानंम हाइदी वेतुल्लाह जो कालान्तर में मेरे परिवार की अभिन्न मित्र हो गयी, का अभूतपूर्व सहयोग अविस्मरणीय है।

तबरीज – ईरान प्रवास की अवधि में ही मैने फ़ारसी भाषा लिखना एवं पढ़ना प्रारम्भ किया तथा ३ मास के सतत अभ्यास के उपरान्त ही मुझे इस भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो सका था । कालान्तर में मैं फ़ारसी भाषा में पारंगत हो गया तथा लोग टैलीफोन पर मुझसे वार्तालाप करने के उपरान्त, मेरे फारसी उच्चारण को देखते हुए, मुझे भ्रमवश दक्षिण ईरान का वासी मान बैठते थे। इन्हीं प्रारम्भिक दिनो मे मुझे श्रद्धेय दादा साहब श्री नर्मदेश्वर प्रसाद उपाध्याय जी, एम.ए., एलएल.बी., एडवोकेट इलाहाबाद हाईकोर्ट जो उस समय ८० वर्ष के थे, का आशीर्वाद युक्त पत्र प्राप्त हुआ जिससे मेरा मनोबल ही नही बढ़ा वरन् परिवार की बौद्धिक धरोहर को दीप्त करने की प्रेरणा मिली। आपका यह पत्र परिशिष्ट में संलग्न है (परिशिष्ट पृ. २२७)। मेरी शोध प्रयोगशाला प्रातः ८.०० बजे खुल जाती थी तथा शोध छात्रगण सामान्यतः रात्रि के ८.०० बजे तक कार्य करते थे। फलस्वरूप अजरबाईजान प्रान्त की समस्त **इयूफोरबिया** प्रजातियों से विभिन्न प्रकार के सह-कैंसरकारी पदार्थों की खोज हुई एवं अनेक शोध पत्रों का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में प्रकाशन हुआ। तबरीज से थोड़ी दूर पर स्थित सईदाबाद नामक स्थान पर मैं और मेरे छात्रगण इयूफोरबिया के पौधों को एकत्र करने गये थे। वहां पर मीलो दूरी तक फैले **इयूफोरबिया सिग्यूरिआना** के पौधे ओर उनमें खिले फूलों के कारण सारी पृथ्वी दूर-दूर तक पीले रंग की दिखती थी। उन फूलों से मधुमक्खियां शहद एकत्र करती दिखीं। वहीं समीप पर वृक्षों में शहद के छत्तों की भरमार थी। यह देखकर मेरे मस्तिष्क में यह विचार आया कि कहीं इन पौधों में उपस्थित प्राकृतिक सह-कैंसरकारी पदार्थ मधुमक्खियों द्वारा शहद में तो नहीं पहुँचाये जाते हैं? यही सोचकर मैनें सईदाबाद क्षेत्र के शहद के छत्तों से शहद एकत्र कराया और सह-कैंसरकारी पदार्थों की उपस्थित वास्तव में इस क्षेत्र के शहद में पायी गयी। इस प्रकार शहद में सर्वप्रथम उपस्थित प्राकृतिक सह-कैंसरकारी पदार्थों को दर्शाने वाला एवं वैज्ञानिक तथ्योंयुक्त मेरा शोध पत्र जापान के कैंसर शोध जर्नल **गान ७१, ५५७, १६८०** में जब प्रकाशित हुआ तो अजरबाईजान क्षेत्र में गले के कैंसर में हो रही वृद्धि का रहस्य स्पष्ट हो गया। विश्व में सर्व प्रथम इस विशिष्ट कार्य को प्रदर्शित और सत्यापित करने के कारण मुझे ईरान के कैंसर शोध के सर्वोच्च पुरस्कार, **शहनशाह रजाशाह पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। यह कार्य कालान्तर में अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी सत्यापित किया गया। मेरे प्राकृतिक सह-कैंसरकारी पदार्थों के शोध सम्बन्धित परिणाम, कई कैंसर संबंधी ग्रन्थों में वर्णित है। इस शोध का विस्तृत विवरण प्रतिष्ठित सीरीज-"**प्रोग्रेस इन दि केमेस्ट्री आफ आरगेनिक नेचुरल प्रोडक्टस, ४४, पृ.-१-६६, १६८३,** तथा "साइंटिफिक फाउन्डेशन्स आफ ओनकालोजी", आदि कैंसर सम्बन्धी अनेक पुस्तकों में हुआ है।

अजरबाईजान प्रान्त के विभिन्न भागों से इयूफोरबिया प्रजाति के पौधों को एकत्र करने, उनकी उपयोगिता, सूचनाएं प्राप्त करने हेतु कई बार इस प्रान्त की यात्राएं करनी पड़ी। प्रथम यात्रा का प्रारम्भ २०.६.१६७७ को हुआ था और अन्तिम यात्रा २६.५.७८ को की गयी थी। **इयूफोरबिया प्रजाति के विभिन्न पौधों को हम लोगों ने शबुस्तर, शराफखाने, शराब, अर्दबील, जुनूज़, मिशकिन शहर, खोतान सराय, अहर, मजराखालेह, सर्दरूद, खुसरोशाह, इलकाची, अजर-शहर, मरागे, जुल्फा, सूफियान, दारादीजे, खोय, शाहपुर, रेज़ाइये-झील के चारों ओर, शहर चाई तथा शिवाली नामक स्थानों से प्राप्त किया था।**

मारागे यात्रा के दौरान विश्व विख्यात मंगोल योद्धा **चंगेज खाँ** के घोड़े का स्मारक देखने को मिला। इस खूंखार मंगोल योद्धा के घोड़े की मृत्यु सरिता चाई के किनारे पर हुयी थी। कालान्तर में उसके वंशजों ने उस बलशाली घोड़े का स्मारक उसके मृत्यु स्थान पर बना दिया था जो आज भी चंगेज खां

की स्मृति में मराग़े शहर में सुरक्षित किये हैं।

तबरीज में रहते हुए मुझे अनेक बार अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों में भाग लेने हेतु ईरान के प्रसिद्ध नगर **इस्फहान**, जिसके बारे में कहा जाता है कि **"इस्फहान-नेस्फजहान अस्त"** इस्फहान आधी दुनिया है, जाने का अवसर मिला। इस नगर का स्थापत्य प्रसिद्ध महल **चहल-सूतून** जो ४० सुन्दर स्तम्भों पर टिका है, यहाँ की हिलती मीनार **मीनारे-जुम्बान** और **मस्जिदे शाह** अपने स्थापत्य के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं। इस्फहान की नीले रंग की विशिष्ट ऊनी और रेशमी कालीने एवं हस्तशिल्प की सुन्दर कृतियाँ देखने को मिलीं। वहाँ पर क्रय की गई ऊँट की हड्डी पर सुनहली कीलों से निर्मित जड़ाऊ फ्रेम तथा अहूरमजदा के चित्रयुक्त अल्युमिनियम, जस्ते की मिश्रित टेबिल फ्रेम मेरे पास सुरक्षित है, जिसका स्टैन्ड बादाम की लकड़ी का बना है।

ईरान के दूसरे विख्यात नगर **शीराज** में (अप्रैल २६ से २६, १६७६) आयोजित ७वीं पहली साइंस कांग्रेस सर्वविधि विलक्षण थी। इसमें अनेक देशों के वैज्ञानिकों से परिचित हुआ तथा यहीं पर रात्रि भोज के अवसर पर ईरान का बहुचर्चित **"बेली डाँस"** देखने को मिला था। होटल शाहअब्बास अपने स्थापत्य के लिए अविस्मरणीय है तो दूसरी ओर शीराज के गुलाब और जन साधारण की भाषा की नफासत आज भी स्मृति में सुरक्षित है। **परशिया पोलिस** एवं **नकशे रूस्तम** को भी इसी कांफ्रेंस के बाद देखा था।

शाह के समय का तेहरान योरप का भ्रम उत्पन्न करता था। इसकी सुन्दर सड़कें, बाजार, सजे-धजे लोग, खियाबाने शाह, तेहरान में शाह का "नियावरान" नामक राजप्रसाद सुन्दर होटलों में आर्य शेरेटन आदि की यादें तेहरान के संस्मरणों से संबद्ध है। मेरी समस्त कान्फ्रेंसों में वार्ता तथा आने जाने का व्यय, वायुयान से गंतव्य तक पहुँचने, अन्तर्राष्ट्रीय होटल में रहने की व्यवस्थाओं का भार तबरीज विश्वविद्यालय वहन करता था। सॉनमर के देश इजराइल में

सह-कारसिनोजिनेसिस के सिद्धान्त के प्रतिष्ठापरक **प्रो. ईजाक बेरेनब्लूम** जो इजराइल की स्थापना के उपरान्त, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंगलैंड के प्रोफेसरशिप से मुक्ति ले इजराइल के **वाइज मैन इन्स्टीटयूट आफ साइंसेज** जो रेहोबोथ नामक छोटे से शहर में स्थित है तथा विश्व का श्रेष्ठतम वैज्ञानिक संस्थान है, में कैंसर शोध के प्रोफेसर होकर आ गये थे। प्रो. बेरेनब्लूम से मेरा पत्राचार द्वारा सम्पर्क था तथा मैने कई बार उनसे अपने अवकाश का कुछ समय उनकी प्रयोगशाला में व्यतीत करने की इच्छा प्रगट की थी। अन्ततः अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर संस्थान, **यू.आई.सी.सी.**, **जिनेवा** के इक्सचेंज प्रोग्राम के अन्तर्गत मेरा वाइजमैन इन्स्टीटयूट आफ साइंसेज में जाने का प्रोग्राम निश्चित हो सका।

मैं २६ नवम्बर, १६७७ को तेहरान से इजराइली ऐयर लाइन "एल-आल" की फ्लाइट लेकर तेल-अवीव के लोद एयर पोर्ट पर ३० नवम्बर १६७७ को प्रातः काल ६ बजे पहुँच गया फोन पर प्रो. बेरेनब्लूम से बातें हुई उनके द्वारा बताये गये वाइज मेन इंस्टीटयूट आफ साइंसेज के द्वार पर मै पहुँचा ही था कि एक कार मेरे बगल आ कर रुकी, मेरा नाम लेकर विशुद्ध इंगलिश उच्चारण से किसी ने मुझे पुकारा, आगे बढ़कर देखा कि प्रो. बेरेनब्लूम स्वयं कार से निकल कर बाहर आकर खड़े थे। सहृदयता से हैन्ड शेक के उपरान्त मैं उनके घर गया, श्रीमती बेरेनब्लूम से मिला। दोनों दम्पत्ति ७० वर्ष के आस-पास रहे होंगे। काफी पीने के उपरान्त मैं संस्थान के **सान-मार्टिन** नामक गेस्ट हाउस में आ गया, वहाँ मेरा रूम पहले से रिजर्व था।

प्रो. वेरेनव्लूम की प्रयोगशाला में अनेक प्रकार के मुषों पर प्रयोग कर, कैंसर उत्पन्न करने की चर्चा हुई। विविध विषयों पर वार्तालाप हुये, कैंसर की जटिलताओं के विषय में ज्ञान लाभ हुआ तथा उसी संस्थान में कैंसर शोध में रत वैज्ञानिकों से परिचय भी हुआ। एक सप्ताह का अवकाश निकाल कर ईजराइल के अनेक स्थानों की यात्राएं भी की। इन यात्रा संस्मरणों का विवरण "एक वैज्ञानिक की डायरी" जो फैजावाद के समाचार-पत्र दैनिक जनमोर्चा के अंको में प्रकाशित हुई थी, में निम्न शब्दों में किया है-

"इसराइल का सर्व प्रथम उल्लेख मिस्र (इजिप्ट) के राजा मेरनेपटाह के विजय स्तम्भ (१२२० ई० पू०) में मिलता है। वह कहता है "इजराइल नष्ट हो चुका है उसके कोई वासी बाकी नहीं बचे हैं। इसके बाद तो ओल्ड टेस्टामेंट में इजराइल और इसके वासियों के मिस्र से भागकर पुनः बसने के कई वर्णन मिले हैं। इजराइल कई बार नष्ट हुआ और पुनः स्थापित हुआ है। ऐसे देश की यात्रा का अवसर मुझे भी मिला। वह भी **"यूनियन इन्टर नेशनल अगेन्स्ट कैंसर"**-जिनेवा-स्विटजरलैंड की कैंसर शोध करने की ग्राँट पर जाना था। वाइजमान इन्स्टीटयूट आफ साइसं रिहोवोय प्रो. इजाक वेरेन्वलूम जो कि कैंसर रिसर्च के जन्मदाता हैं, के साथ कुछ वैज्ञानिक समस्याओं पर विचार विमर्श करने।

तेल अवीव एयरपोर्ट से रिहोवोय टैक्सी द्वारा ३० मिनट की यात्रा के वाद पहुँचा जा सकता है। वहीं पर विश्व विख्यात वाइजमान इंसटीटयूट है। टैक्सी रोककर आवश्यक पत्रादि दिखाने के वाद इन्स्टीटयूट के द्वारापाल ने प्रो. वेरेनवलूम को फोन किया और वे ७० वर्षीय युवा तत्काल आये और उन्हीं के साथ में इन्स्टीटयूट के गेस्ट हाउस (अतिथि गृह) में गया। इसकी स्थापना अर्जेटीना के एक परम समृद्ध यहूदी वुर्नल ने की थी। मेरे थोड़ा स्वस्थ होने के बाद प्रो. वेरेनवलूम पुनः आये और उन्हीं के साथ उनके आवास गया। शाम का भोजन हुआ और फिर विविध समस्याओं पर वाते होती रहीं। तेल-अवीव इजराइल का सुन्दरतम नगर है जिसमें म्यूजियम, गैलेरी और विविध सांस्कृतिक केन्द्र हैं। सिनेमा गृहों की भरमार है और एक दो छवि गृहों में हिन्दी चल चित्र लगातार-ईरान की भाँति दिखाये जाते हैं। तेल अवीव और जाफा दोनों मिलें हैं और यही पर इजराइल की प्राचीनता के भी दर्शन होते हैं। यह कहना ही पर्याप्त है कि याफो जिसका अंग्रेजी में उच्चारण याफा या जाफा है, नोंह्य के जल प्लवन के काल का है और ६५०० वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। तेल अवीव और जाफों दोनों समुद्र तट पर हैं। सारे शहर में बसों से आया और जाया जा सकता है। लोग अंग्रेजी, जरमन, फ्रेंच और अन्य भाषाएँ जानते हैं। आपको यहां पर विश्व के हर प्रकार का भोजन और वासी मिल जायेंगें। यहां पर ऐल्फावेट म्यूजियम जिस में शब्दों और अक्षरों की उत्पत्ति किस प्रकार हर भाषा में में हुई, दर्शनीय है। याफों से आरकीयोलाजिकल म्यूजियम और आर्टिस्ट क्वाटर्स देखने योग्य है। आर्टिस्ट क्वाटर्स रात में ६ बजे के बाद खुलते हैं जहाँ पर चित्रकार विविध वेशभूषा में अपने चित्रों की प्रदर्शनी करते हैं और यह कार्यक्रम प्रातः ४ बजे तक चलता रहता है।

रशियन मोनासट्री, नेपोलियन हिल, शलोम मेयर टावर और याफो-पोर्ट दर्शनीय स्थल है, परन्तु हेलनारुवेस्टाइन का म्यूजियम सुन्दर और विलक्षण हैं।

तेल अवीव सुन्दर रोड़साइड रेस्त्राओं से युक्त है आप कहीं भी वैठ कर काफी या वियर पी सकते हैं। अपनी भूख प्यास और थकान दूर कर सकते हैं। यहाँ की **डीजनगाफ स्ट्रीट** पेरिस की **बुलवार डू मोपरनास** की और वर्लिन के **उन्टर डेम लिन्डेन** की वारबार याद दिलाती है। यहाँ रात्रि मनोरंजनों

की कोई कमी नहीं हैं।

रिहोवाथ से तेल अंवीव जाते समय वह स्थान जो कि इजराइल के मध्य क्षेत्र की राजधानी है, रामला नाम से विख्यात है। यह आधुनिक इजराइल का एक मात्र स्थान है जिसकी स्थापना अरबों ने ७१६ ई. में की थी। यह स्थान यहूदियों को वर्वरता पूर्वक गैस चैम्बर में, द्वितीय विश्व युद्ध के समय, मारने वाले नाजी, हिटलर सहयोगी, ऐडोल्फ आइखमान को फाँसी दिये जाने के कारण विख्यात है।

इजराइल की राजधानी जेरूशलम (येरूशलोम) यहूदियों का राजनैतिक केन्द्र ही नहीं वरन आध्यात्मिक और धार्मिक केन्द्र है। यहीं पर पुराकाल में भविष्यवाणियाँ और युद्ध हुए थे। ऐब्राहेम के काल से ही यह धार्मिक केन्द्र सालेम के नाम से विकसित होता रहा है, राजा-सोलमन के युग में, इसके चरम उत्कर्ष का काल रहा है। इसके उत्तर की प्राचीर का निर्माण सम्राट सोलेमन ने कराकर यहोवा के मन्दिर की स्थापना की। ५८७ ई. पू. वेवीलोन के सम्राट नेवूयाद नेजार ने इसको पूर्णतः ध्वस्त कर वेवीलोन के अन्तर्गत कर लिया था। पर यहूदियों ने पुनः विजय प्राप्त कर वेवीलोन के हाथ से इस आध्यात्मिक केन्द्र को मुक्त कर, स्मरण हेतु दूसरे मंदिर की स्थापना की। यह यहोवा का मंदिर रोमन सम्राट टाइटस द्वारा ७० ई.पू. में पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया गया। येरूशलेम रोमनस, यूनानियों, ईरानी और मसीहियों के हाथ आता रहा पर यहूदी सदा संघर्षशील थे और वारम्वार इसे स्वतंत्र कराते रहें। वर्तमान काल में भी यह संघर्ष स्थल ही है।

ज्यूइश क्वार्टर में प्रवेश, इस शहर के मुख्य द्वार जाफा गेट से किया जा सकता है। यहाँ पर पुराने सिनोगागस हैं जिन पर ६ दिनों के युद्ध के वाद, यहूदियों ने जीत के वाद अधिकार किया था। सर्व प्राचीन रामवान सिनोगाग है जिसमें अव प्रार्थनायें करीव १००० साल वाद शुरू हुई हैं। ये सिनोगागस इजराइली स्थापत्य के प्रतीक है। इजराइलियों के प्राण हैं।

पश्चिमी द्वार-जियान गेट से प्रवेश करने पर आरमेनियन क्वार्टर्स में पहुँचा जा सकता है। इसके वासी यहूदी आरमोनिया रूस से ५वीं शताब्दी में आयें। सेन्ट जेम्स का चर्च वहुत विशाल और आरमेनियल कला का प्रतीक है। क्रिशिचयन क्वार्टर्स में प्रवेश देमेस्कश गेट या जाफा गेट से किया जा सकता है और अन्य चर्चो को देखते हुए भी सर्व प्राचीन चर्च आफ होली सेपलचर जो कि रोमन सम्राट कान्स्टेसटाइन द्वारा वनाया गया था दर्शनीय है। मोसर्लिम क्वार्टरस में प्रवेश करने के बाद लगता है कि वास्तव में यह क्षेत्र परम विशाल है। इसी क्षेत्र में वाजार मस्जिदें और अरव "गह-वे-खाने" हैं, जहां पर आप हुक्का गुडगुडा सकते हैं, भुना मुर्ग खा सकते हैं एवं अरविक नृत्य देख सकते हैं। ये वाजार-चाहर दिवारियों से घिरे तथा छतों युक्त होते हैं, दुकानें अन्दर होती है। आप ऊँट पर चढ़कर जेरूशलम देख सकते हैं, नहीं तो वैसे भी घूम सकते हैं।

जेरूशलेम में दर्शनीय स्थलों में सम्राट डेविड की कब्र, सीनेट (पार्लियामेंट), इजराइल म्यूजियम और याद-वंशेम प्रमुख है। यह स्थल द्वितीय विश्वयुद्ध में नाजियों द्वारा ६० लाख यहूदियों की हत्या को स्मरण दिलाता है।

याद-वाशेम यहूदियों का आधुनिक धार्मिक स्थल है। यहाँ पर ६० लाख यहूदियों की याद में एक दीप सतत जलता रहता है। यहीं पर संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से संघर्षरत यहूदियों की प्रतिमाओं की बड़ी ही सुन्दर लौह रचना है और इसी से थोड़ी दूर पर पहाड़ियों पर ६० लाख साइप्रेस के वृक्ष इसी

मृति को जीवित रखने के लिए लगें हैं।

थोड़ी ही दूर पर विख्यात डेड-सी-स्क्रील म्यूजियम है, जिसमें चमड़े और पर्चमेंट पर लिखी (अरामिक लिपि में) वाइविल के पन्ने हैं। ये वहुत ही सुरक्षा से रखें हैं और इसे हर पर्यटक इजराइल जाने पर देखता है। ये पाण्डुलिपियां एक गडेरिये द्वारा डेड-सी (मृत-सागर) की पहाड़ियों की गुफाओं से प्राप्त की गई थीं। जेरूशलम से आगे चलने पर हिव्रान की पहाड़ियाँ शुरू हो जाती हैं और वेथलेहम की ओर जाने वाले पथ पर ही राखेल की कब्र है। ये जैकोव (याकूव) की पत्नी थी जो यहूदियों और मुसलमानों के पृज्य हैं। कब्र वड़ी ही भव्य है और १८४७ में इसका जीर्णोद्वार सर मोजेज मोन्ट्रीफोर ने कराया था।

वेथलेहम जिसके हिव्रू में शाब्दिक अर्थ है ''रोटीओ का गृह'' यह इंगित करता है कि यह वास्तव में उपजाऊ भाग रहा है। यह चारों ओर से जूड़ा ही पहाड़ियों से घिरा है और पूर्व की ओर जाने पर मृत सागर का रास्ता शुरू हो जाता है।

वेथलेहम में ही ईसामसीह ने जन्म लिया था और परम श्रद्धालु ईसाई यहां पर चर्च आफ नेटीवेटी को देखने जाते हैं, जो कि सवसे पुराना गिरजाघर है। इसकी सवसे विलक्षण वात है इसकी शीशे की छत जो कि आग से भी ध्वस्त नहीं की जा सकती। यहीं पर वह स्थल है जहाँ ईसा पैदा हुए थे, और एक सुन्दर तैल चित्र है जो कि काफी प्राचीन वताया जाता है इसमें ईसा अपनी माँ की गोद में हैं। गिरजा घर एक किला सा लगता है और हर साल क्रिसमस पर यहाँ हो रहे धार्मिक पाठ के विषय टेलीविजन के माध्यम से विश्वभर में दिखाये जाते हैं।

वेथलेहम ओर जेरूशलम के वीच (जेरूशलोम से १३ किमी. पर) सम्राट सालोमन के तालाव हैं इन तीनों तालावों में झरनों का पानी एकत्र होकर नहर द्वारा जेरूसलोम लाया जाता था ये पत्थरों के वने जलाशय विशाल और सुदृढ़ हैं और काल के थपेड़ों को सहते आज तक सुरक्षित हैं।

. वेथलेहम से जेरूशलम आकर फिर हेव्रान की यात्रा प्रारम्भ होती है। हेव्रान अरविक में एल खलील के नाम से विख्यात है। यह इजराइल का सवसे ऊँचाई पर वसा शहर है (९२६ मी. समुद्र तट से) यहाँ पर मुसलमानों का वाहुल्य है और यहीं पर हेव्रान ग्लास वनते हैं जो अपनी सुन्दरता के लिए वहुचर्चित है। हेव्रान में परम्परानुसार आदम और हौवा, एव्राहीम और सारा, इजाक और रेवेका तथा जैकोव और लीह की कब्रें हैं।

यात्रा थका देने वाली थी, पर जेरूशलेम में हीरों की दूकानों पर चकाचौंध थकान दूर करा देती थी। होटल में रात्रि वितायी और दूसरे दिन पुनः लम्बी यात्रा जिसमें जेरीखो, डेड-सी, एनगिड़ी, वेरशीवा एवं मसादा को देखने का प्रोग्राम था, पर चल पड़ा। इजराइल के इतिहास में ये क्षेत्र हर दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं और यहूदियों ने अस्तित्व की रक्षा हेतु कई बार यहाँ पर संघर्ष कर अपनी तथा परम्पराओं की रक्षा की है। **''सोलमन के देश इजराइल में एक वैज्ञानिक** [redacted] **की डायरी से - जनमोर्चा सोमवार १९ मई, १९९८**

इजराइल के सिंहगढ़ - मसादा के आस पास

''जेरूशलेम और हिव्रान के मार्ग पर चलते हुए जितनी दूरी तक दिखाई पड़ता है उसे जूड़ों का क्षेत्र कहते हैं। जूड़ा का क्षेत्र परम विशाल एवं पहाड़ियों से घिरा है। भूमि शुष्क और वालूकामय है। हिव्रान से वीरशीवा का रास्ता काफी लम्बा था और दूरी कष्टदायी भी था, क्योंकि मेरी वगल में दक्षिणी

अफ्रीका का एक यहूदी बैठा था जो कि शत प्रतिशत रंगभेद की नीति से प्रभावित था। वह प्रस्तर प्रतिमावत शान्त ओर वक-वत ध्यानाविस्थत प्रतीत होता था। उसके ध्यान में विघ्न न पड़े इसका ध्यान रखकर मैने स्थान परिवर्तन कर लिया और वस की तेज स्पीड ने शीघ्र ही वीरशीवा पहुँचा दिया।

वीरशीवा-नगेव मरुभूमि की राजधानी है ओर ऐब्राहीम के १५०० वर्ष पूर्व यह शस्य श्यामला भूमि थी। यहां के उत्खनन में गहने और अन्य वर्तन आदि मिलते हैं। यहीं पर वाइजेन्टाइन और रोमनकाल की बहुत सी वस्तुएँ एवं सिक्के आदि भी उत्खनन में प्राप्त हुए मिलते हैं। यहाँ पर वदुदन लोगों का वाहुल्य है और ये इस्लाम के पोषक हैं। यहीं पर हम लोगों को एक ८० वर्षीय शेख की २० वर्षीया पत्नी के पुत्र प्राप्त होने के सुअवसर पर खुरमा (खजूर) खाने को मिला (यह शेख साहेब की ३० वीं पत्नी थीं) वीरशीवा में ऐरिड जोन रिसर्च केन्द्र दर्शनीय है। ६० मिनट का अवकाश था। वीरशीवा में एक कहवा खाने में जाकर काफी पी। वह तो काफी और चीनी का मिश्रण थी। जिसमें गर्म पानी पीने के लिए डाल दिया था। वचा समय ऐरिड जोन रिसर्च केन्द्र के डायरेक्टर से वातचीत करने में लगाकर पुनः केन्द्र (वस के) पर आकर मृत-सागर की यात्रा प्रारम्भ की।

मृत सागर इस धरा का सवसे नीचा सागर हैं यह समुद्र तट से ३९७ मीटर नीचे है और ७८ किलोमीटर लम्बा तथा १७.५ किलोमीटर चौड़ा है। प्रतिवर्ष इससे १६००० लाख क्यूसिक मीटर पानी आता है तथा वाष्पीकरण के परिणाम स्वरूप नमक की मात्रा अत्यधिक हो जाती है। इस सागर में कोई वनस्पति या जीवन नहीं है और कोई भी व्यक्ति इसमें डूब नहीं सकता। अधिकतर सैलानी तैरने का आनन्द लेने जाते है। तैरते समय नमकीन जल आँखों में जाने पर बहुत कष्टदायी हो जाता है, इस कारण अधिकतर लोग पीठ के वल तैरते हैं। यह सागर पूर्व में मोआ और अन्मोन तथा पश्चिम में जुड़ा की पहाड़ियों से घिरा है। वहाँ पर अधिकांश वात से पीड़ित रोगी, होटलों में रोज स्नान करने के हेतु हमेशा टिके रहते है। मृत सागर दिन में अत्यधिक गर्म और रात्रि में ठण्डा हो जाता है। वास्तव में ऐसा लगता है कि रात्रि में यहाँ वहार आई है। इसी मृतसागर के तट पर साडेम का पर्वत है जिसका उल्लेख वाइविल में वारम्वार हुआ है। इसी के वासियों को उनके कुकर्मों को देखते हुए श्राप दिया गया था कि तुम सव नष्ट हो जाओगें। इसके विषय में एक अंग्रेजी चलचित्र "साडेम-और गूमेरा" भी देखने योग्य है।

मृत सागर से थोड़ी दूर पर वह गुफाएं स्थित हैं जहाँ वाइविल की परचमेन्ट पर लिखी प्रतियाँ प्राप्त हुई थीं। यह प्रतियाँ जेरूसलम के म्यूजियम में सुरक्षित है। मृत सागर के पास पहुँच कर सभी यात्री उतर पड़े और कैमरे लगातार क्लिक करने लगे। भीषण गर्मी एवं शुष्क वातावरण के कारण अधिक देर तक वाहर रुकना कष्टदायक था। इस कारण सभी यात्री एयरकन्डीशन वस में आ बैठे और यात्रा नखलिस्तान ऐनबोकी और मसादा की तरफ प्रारम्भ हुई। ऐनवोकी झरनों ओर ताड़ के वृक्षों से घिरा सुन्दर स्थल है जहां पर कुछ समय रुक कर हम लोगों की वस मसादा की ओर चल पड़ी।

मसादा यहूदियों का प्राचीनतम किला है। यह उनके इतिहास में वही स्थान रखता है जो चित्तौड़, सिंहगढ़ अथवा झांसी के किलों को भारतीय इतिहास में प्राप्त है। मसादा में ही ७० ई० में यहूदियों ने रोमन साम्राज्य के विरूद्ध लगातार दीर्घ अवधि तक संघर्ष किया था। उस समय मसादा की पहड़ियों पर निर्मित इस किले में मात्र ९६० यहूदियों ने रोम की विशाल सेना के विरूद्ध ३ वर्ष तक संघर्ष करने के उपरान्त अपने को पराजित न देख पाने के कारण आत्महत्या कर ली थी। इसके बाद यह किला

रोमनों के हाथ चला गया था।

सारा किला सम्राट हिरोड के समय का है। सुन्दर कमरों स्नान' घरों और मंदिरों से सुसज्जित भवनों के अवशेष आज भी इस किले में सुरक्षित हैं तथा सुरक्षित है रोम की सेना की घेरा बन्दी भी जो उन्होंने इस दुर्ग को नष्ट करने के पूर्व की थी।

ऊँची पहाड़ी पर स्थित मसादा दिसम्बर मास में इतना गर्म था कि अधिकांश लोग लगातार मिनरल वाटर या बियर पीने के बाद भी परेशान थे। सभी शीघ्रता से दौड़ कर बस में बैठ गये और उसके एयर कन्डीशन वातावरण में उस युग की चर्चा करने लगे जिसको वह देखकर आये थे। शाम का नास्ता कर हम लोगों की बस ७०० किलोमीटर की यात्रा के बाद तेल अबीब पहुँची। सबको "लईला-तोब" शुभ रात्रि कह कर जब मैं इंस्टीटयूट पहुँचा तो द्वार के गार्ड ने मुस्करा कर "बाकर तोव-शुभ प्रभात" कह कर अन्दर जाने की आज्ञा दी।

इजरायल ही एक ऐसा देश है जहाँ पर सभी देशों के लोग हैं। यहाँ पर भारतीय यहूदी भी है जो कोचीन अथवा बम्बई के वासी थे परन्तु अब वे इजराइल में रह रहे हैं। इजराइल में सभी देशों को भोजन उपलब्ध है जिसमें हलुवा, जलेबी से लेकर फ्रांसीसी भोजन तक सम्मिलित है। आपको यहाँ ६ प्रकार की काफी पीने को मिल सकती है इसमें नेस्काफे अथवा काफे, हाफुख-दुधयुक्त काफी, काफे-शाखोर-ब्लैक काफी, काफी तुर्की- जिसमें आधे प्याले में चीनी और बाकी में काफी रहती है जिसे लोग पीते नहीं खाते हैं तथा काफेकार-ठंडी काफी जो क्रीमयुक्त होती है, विशेष चर्चित है।

यहाँ का प्रातः का नाश्ता भी बड़ा विचित्र है तूना मछली, खीरा, टमाटर, जैतून, काफी और सन्तरे के रस को लेने के बाद ही टोस्ट और बटर लेने का रिवाज है। इजराइल के सन्तरे जो जाफो नामक स्थान में उत्पन्न होते हैं विश्व प्रसिद्ध हैं। यहां का भोजन भी दो प्रकार का होता है। कट्टरवादी लोगों के लिए खोशेर विधि से भोजन तैयार किया जाता है, जिसमें वाराह का मांस वर्जित है। गोश्त एक विशेष ढंग से ही काटा जाता है तथा सावधानी से बनाया जाता है। परन्तु अधिकांश लोग योरोपीय भोजन करते हैं। धर्म गुरू-रावी लोग शराब नहीं पीते परन्तु सामान्य जन सभी प्रकार की शराब और बियर पीते है। इजराइल के चमड़े के सामान हीरे के आभूषणों की ही भाँति विख्यात हैं, मेरे यहाँ प्रवास काल में उनको खरीद के ले जाने में ३० प्रतिशत की सारी छूट थी। यहाँ की मुद्रा पाउण्ड कही जाती है परन्तु यह उस समय भारतीय रूपयों की मूल्य की आधी थी और विनिमय दर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा अधिनियम के द्वारा नियंत्रित था।

वाइज मैन इंस्टीट्यूट २० एकड़ क्षेत्र में बना है तथा इसी में रहने के लिए प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों के लिए भवन हैं, जो उनको जीवन भर रहने के लिए मिलते हैं। परन्तु यदि उन्हें कहीं और जाना है तो उस स्थिति में वे अपने भवन को बेच सकते हैं जिसे वहीं के संस्थान में रत कोई व्यक्ति ही खरीद सकता है। इस संस्थान में एशिया का प्रथम परमाणु विघटन करने का यंत्र है तथा कैंसर शोध और अन्य शोधों में इस संस्थान का विशेष योगदान है।

एक मास का समय समाप्त हो रहा था। संस्थान में प्रो. वेरेनवलूम एवं सहयोगियों से विदा लेकर फेयरवेल की काफी पीकर, सामान लेकर तेलअबीव के **लोद** एयरपोर्ट पर आया। दो घण्टे की उड़ान के बाद मेहराबाद-तेहरान पहुँच गया। यात्रा में प्रो. वेरेनवलूम का यह कथन कि "विज्ञान की प्रगति के

साथ-साथ मानव की सहज भावनाएँ नष्ट नहीं होनी चाहिए, तथा यदि विज्ञान और वैज्ञानिक ऐसा नहीं करते तो मानव समाज के नष्ट हो जाने की सम्भावना है।" कानों में गूँज रहा था।

- इजराइल के सिंहगढ़ मसादा के आस-पास एक वैज्ञानिक की डायरी से - जमशोर्ला, २ जून १९८१।

प्रो. वेरेनवलूम की प्रयोगशाला में प्राप्त हुआ ज्ञान मेरे लिए विविध प्रकार के जैविक माडलों के विकास में एवं कैसर शोध में सहायक हुआ था। फैजाबाद से जब मैंने **इण्डियन जर्नल आफ कैंसर एण्ड बायोलजिकल रिसर्च"** का प्रकाशन प्रारम्भ किया तो प्रथम अंक के गेस्टऐडीटोरियल को प्रो. वेरेनवलूम ने ही कृपा कर लिखा था। आपको फोर्ड फाउण्डेशन अमेरिका की कैंसर शोध हेतु सर्वोच्च पुरस्कार से १९८० में सम्मानित किया गया था। प्रो. वेरेनवलुम का स्मरण कैंसर शोध के आधुनिक उत्थान का स्मरण है।

— अर्जेन्टीना मे सात - दिन —

५ अक्टूबर १९७८ को १२ वीं अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर कॉंग्रेस जो अर्जेन्टीना की राजधानी ब्यूनेस-एयरस में आयोजित थी, में तवरीज विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने का अवसर मिला था। इस कारण मैनें तवरीज से तेहरान के लिए ईरान एयर की उड़ान से १, अक्टूबर को प्रस्थान किया। तेहरान के मेहराबाद एयर पोर्ट से पैन-एम की उड़ान रात्रि को ९ बजे थी। उसने प्रातः २ बजे अक्टूबर को ७ बजे लन्दन के हीथ्रू एयर पोर्ट पर यात्रियों को पहुँचा दिया। लन्दन जाने वाले यात्रीगण उतर गये तथा **न्यूयार्क-अमेरिका** जाने वाले सभी यात्री पुनः प्लेन में आ गये। न्यूयार्क के लिए उड़ान इसी पैन-एम से करीब ४५ मिनट बाद हीथ्रो एयर पोर्ट से प्रारम्भ हुई थी। समय का परिवर्तन हो रहा था। यह मेरी पहली ट्रांस-एटलान्टिक यात्रा थी। समाचार पत्रों का अवलोकन करके, काफी, लन्च लेते हम यात्रीगण २ अक्टूबर की शाम को न्यूयार्क के **जान. एफ. कैनेडी एयरपोर्ट** पर पहुँचे। यहां से अर्जेन्टीनियन एयर लाइनके प्लेन से रात्रि ९ बजे पुनः यात्रा प्रारम्भ हुई। प्लेन में यात्रीगण जोर-जोर से बाते करतें, वाइन पीते, डिनर लेते, अर्द्धनिद्रित अवस्था में यात्रा कर रहे थे। स्पैनिश भाषा के कुछ ही शब्दों का मुझे ज्ञान था इस कारण मैं सब सुनते हुए भी कुछ समझ नहीं पा रहा था। परन्तु डिनर के साथ दी गयी वाइन सुस्वादु थी, यात्रा की थकान थी इस कारण कब सोया याद नहीं है। ३ अक्टूबर १९७८ के प्रातः प्लेन के ब्यूनस एयरस के एयरपोर्ट पर लैडिंग की सूचना ने मुझे जगा दिया। जब समय पूछा (मेरी घड़ी में तो ईरान का समय था) वहाँ प्रातः के ७ बज रहे थे। जब मैं ईरान से चला था तो वहाँ बर्फ पड़ रही थी और यहाँ पर बसन्त ऋतु थी। एयर पोर्ट पर अभ्यागतों को होटल तक ले जाने के लिए डेलीगेटस आये थे। मेरे लिए रिजर्वेशन ब्यूनस एयरस शहर के मध्य में स्थित विख्यात शेरेटन होटल में था। इस श्रृंखला के होटलों के शयन कक्ष, लॉउंज, डाइनिंग हाल अतीव भव्य होते हैं उसी का दर्शन ब्यूनेस एयरस के शेरेटन होटल में भी हुआ था।

ब्यूनेस एयरस स्पेनिश भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ "अच्छी हवा" होता है। स्पेनिश लोगों द्वारा, एटलान्टिक महासागर के तट पर स्थापित होने के कारण तथा स्वच्छ वायु के झोंकों से सदैव आन्दोलित होते रहने के फलस्वरूप, तटवर्ती नवीन नगर का नामकरण **ब्यूनेस एयरस** हुआ। १२ वीं अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर कांग्रेस एवं ब्यूनेस एयरस में बिताये गये दिनों के संस्मरण मेरी डायरी में निम्न रूप में अंकित हैं -

"२० सितम्बर, १९७८ को १२ वीं अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी डॉ० सोलमन वर्ग का टेलीग्राम मिला कि मुझे कांग्रेस में भाग लेना है तथा भाषण देना है। समय कम था अतः मैं विश्वविद्यालय से अवकाश लेकर दूसरे दिन सुबह तेहरान स्थित अर्जेन्टीना के दूतावास से वीसा लेकर,

ईरान एयर से रिर्जवेशन कराकर वापस तवरीज आया। आवश्यक सामान लेकर निश्चित समय पर तेहरान से लन्दन की यात्रा प्रारम्भ हुई। हिथ्रो एयरपोर्ट पर २ घण्टे रूकने के बाद जब विमान ने पुनः उड़ान भरी उस समय इंग्लैण्ड में रात्रि थी पर ज्यों-ज्यों हम लोग अमेरिका की ओर बढ़ते गये एटलान्टिक महासागर के वक्ष पर एक दूसरा ही नजारा था। वह था सूर्योदय का। इसी कारण वायुयान में लगे काले परदों को खींच कर सोना प्रारम्भ किया गया। करीव १० घण्टे की यात्रा थी और वारम्बार सुस्वाद भोजन और काफी, सोने के सारे प्रयास विफल कर देती थी। जल्दी में तवरीज से चलते समय विजली का शेवर भूल आया था परन्तु वायुयान की एयर होस्टेज की कृपा से यह समस्या हल हो गयी। उसने एक इलेट्रिक शेवर का प्रवन्ध कर, मेरे चेहरे की दाढ़ी विहीन करने में सहयोग दिया।

अधिकांश यात्रीगण मुझे भारतीय न समझ कर कोई अरव टूरिस्ट समझते थे परन्तु जब कई बार उन्हें समझाता था, तो उन्हें मेरी वात पर विश्वास होता था। विमान शाम को न्यूर्याक पहुँचा और एयरपोर्ट की फारमैलिटीज को समाप्त कर पुनः अर्जेनटिनियन एयर लाइन्स से यात्रा प्रारम्भ की। ऐरोप्लेन में सारा वातावरण स्पैनिश था और मुझे इस भाषा का मात्र कामचलाऊ ज्ञान था, परन्तु स्पैनिश सदभाव के कारण कोई असुविधा नहीं हुई।

व्यूनेस एयरस वहुत ही सुन्दर नगर है और सच ही यह दक्षिण अमेरिका का पेरिस कहा जाता है। सारा शहर सेक्टरों में वँटा है तथा यहां की **६ जुलाई का राजपथ** विश्व की सवसे चौड़ी सड़क है। इसी पर स्थित है विख्यात आवलीक जो कि स्पेन के इस देश पर विजय का प्रतीक चिह्न है तथा रात्रि के प्रकाश में परम सुन्दर दिखता है। कैंसर कांग्रेस का केन्द्र प्लाजा सान मार्टिन था और यही इस नगर का हृदय भी है। इस नगर की सारी सड़कें एवेन्यू नाइन डे-जूलिओ, ६ जुलाई का राजपथ, के समानान्तर हैं तथा विख्यात फ्लोरिडा स्ट्रीट भी यहीं पर है, जिस पर मोटरें तथा अन्य वाहनों को ले जाना मना है। यह राजपथ मात्र पदयात्रियों के लिए है। यह स्ट्रीट वास्तव में दर्शनीय है जिसके दोनों तरफ विशाल दुकानें और विक्रय केन्द्र है। इस देश में वढ़ती कीमतों के कारण लोग तत्काल समान खरीद रहे थे, क्योंकि दूसरे दिन वही सामान और मंहगा हो सकता था। इस राजपथ पर चमड़े के विभिन्न वस्त्रों से लेकर काकातुआ- जो एक प्रकार का तोता होता है, भी सुलभ है। रात्रि में सारा नगर विद्युत प्रकाश में जगमगता है, सड़के लोगों से भर जाती है युवक युवतियाँ स्वच्छन्द आचरण करते दिखते हैं। यहाँ पर भी पेरिस की ही भाँति आलिंगनों और चुम्वनों की वौछार होती दिखती है। सारा नगर कैवरे केन्द्रों और नृत्यशालाओं से भरा है। यहीं पर विश्व विख्यात ओपेरा-क्योलन भी है।

व्यूनेस एयरस की सर्व प्रथम स्थापना १५३६ ई० में और तदुपरान्त १५८० ई० में हुई थी। यह नगर प्लाटे नदी के तट पर बसा है तथा २०० वर्ग किमी० में फैला है। यहाँ पर ८० लाख लोग वास करते हैं, जो अर्जेन्टीना की एक तिहाई जनसंख्या हैं। इस नगर के सिनेमा स्ट्रीट पर १५ सिनोमा हाउस हैं जिनमें से सवसे नवीन अन्तर्राष्ट्रीय फिल्में दिखायी जाती हैं। यहां की ४० आर्ट गैलेरियों को देखने के लिए जितना ही समय दिया जाए वह कम है। इसी नगर में रेस कोर्स है, फूटबाल स्टेडियम है तथा सॉताफे एवेन्यू हैं जहाँ पर अत्याधुनिक वस्त्र एवं आभूषण मिलते हैं।

कैंसर कांग्रेस का उद्घाटन मिलेट्री जनता के सर्वोच्च जनरल वायोला द्वारा ल्यूना पार्क स्टेडियम में किया गया तथा प्रारम्भिक औपचारिकताओं के उपरान्त लोक एवं वाद्य नृत्य एवं राष्ट्रीय धुन वजायी गयी। दिन भर कैंसर कांग्रेस की प्रोग्रामों की व्यस्तता थी १६,००० लोगो में से पुराने परिचितों को

तलाशना, उनसे सम्पर्क तथा सेमिनारों में भाग लेना थका देने वाला था। सारी कांग्रेस प्लाज़ा सान मार्टिन के पासशेरेटन होटल, प्लाजा होटल तथा इण्डस्ट्रियल क्षेत्र में आयोजित थीं। सारी व्यवस्थाएं अतीव सुन्दर थीं तथा किसी भी व्यक्ति के विषय में सूचना तत्काल उपलब्ध थी। मैं अपने लेक्चर को देकर वैज्ञानिकों से मिलते हुए इस नगर के प्रसिद्ध पिकनिक स्थल मार-डी-ल-प्लाट, को देखने निकल गयां यह स्थल अपने नाम को सार्थक करता है, क्योंकि यह अटलान्टिक महासागर में स्थित मोती की भाँति दिखता है। मीलों तक फैली बालुका राशि पर लोग पिकनिक मनाते हैं, स्नान करते हैं, मधुशालाओं का आनन्द उठाते हैं। लोग बाक्सिंग रिंग्स, पोलो ग्राउण्डस एवं डांसिंग का आनन्द उठाते हैं। इस प्रकार के वातावरण का आनन्द अपने भारतीय मित्रों के साथ उठा कर हम लोग रात्रि में वापस आ गये।

इस कैंसर कांग्रेस में अतिथियों के हेतु विविध प्रकार की वॉबेक्यू (ताजे मांस को आग में भून कर भोजन हेतु देना) एवं विविध प्रकार के मांसों को जिन में वड़ी-बड़ी भेड़े, वाराह, हिरण आदि जो पूरे के पूरे भुने गये थे, अतिथियों को वाइन के साथ दिये जा रहे थे। विविध प्रकार के समुद्री जीव भी भोजन हेतु उपलब्ध थे तथा पनीरों ओर अनेक प्रकार की ब्रेड़ों के पहाड़ से लगे थे। जिनको लोग स्वाद लेकर खा रहे थे।

अर्जेन्टीना में जिस प्रकार घोड़ों के ऊपर वैठने का प्रर्दशन सैनिकों ने दिखाया था, उसका वर्णन दुरूह है, परन्तु उसे भुला पाना भी उतना ही कठिन है। अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर कांग्रेस प्रत्येक ४ वर्ष के वाद होती है। इसका आकर्षण इस कारण महत्वपूर्ण है कि इसमें सम्मिलित होने से उन वैज्ञानिकों से, जिनसे परिचय मात्र पत्राचार से होता है, प्रत्यक्ष भेंट होती है तथा वैज्ञानिक समस्याओं पर विचार विमर्श करने का अवसर भी मिलता है। यह सम्पर्क को घनिष्ठ और मधुर ही नहीं बनाता वरन् वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को दृढ़ भी करता है।" **अर्जेन्टीना में ७ दिन – एक वैज्ञानिक की डायरी से - जनमोर्चा १९ जून, १९८०**

पर्यटकों के स्वर्ग रिओ-डी-जेनेरो में

कैंसर कांग्रेस की समाप्ति के एक दिन पूर्व ही मैने ब्राजील के लिए वहां की एयर लाइन वैरिग से २ घण्टे की यात्रा कर **ब्राजील** के विख्यात नगर **रिओ डि जेनरो** पहुँच गया। यदि ब्यूनेस एयरस पूर्णरूपेण श्वेत है तो रिओ-डि-जेनरो भारत की भाँति जातीय मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। रिओ-डि-जेनरो में आपको मिश्रित जापानी, निग्रो, पोर्तगीज, जर्मन, चीनी, एवं अन्य यूरोपीय जाति के लोग मिल जायेंगे। यहीं पोंतगीज संस्कृत की विशेषता है। समस्त दक्षिण अमेरिकी देशों में स्पैनिश बोली जाती है परन्तु ब्राजील की राष्ट्र भाषा पोर्तगीज है।

रिओ-डि-जेनरो के नामकरण की कथा विचित्र है। समुद्र यात्रा पर निकले पोर्तगीज कैप्टन का जहाज जिस नदी के समीप लगा था, वहाँ का पानी पीने योग्य था, परन्तु चारों तरफ घना जंगल होने के कारण पोर्तगीज लोग इस नदी का नाम न जान सके थे। इस कारण उन्होंने अपने इस नदी के तट पर पहुँचने के महीने के नाम से इस सरिता का नामकरण जनवरी-की-सरिता या रिओ-डि-जेनरो कर दिया। कालान्तर में इस सरिता के समीप जो नगर बसा उसका भी नाम तद्अनुरूप हो गया। मैं १० अक्तूवर १९७८ को इस नगर में पहुँचा था तथा इस नगर के विषय में अंकित मेरी डायरी के पृष्ठों के अनुसार-

"रिओ-डि-जेनरो ब्राजील का हृदय है यह देश सम्पूर्ण दक्षिणी अमेरिका के क्षेत्रफल का आधा है। इसके उत्तर में फ्रेन्च गिनी, सूरीनाम्, गियाना, वेनीजूयेला और कोलम्बिया है तथा पश्चिम में पेरू एवं

वोलीविया, दक्षिण पश्चिम में परागुये एवं अर्जेन्टीना तथा दक्षिण में उरूग्वाय है। इसका क्षेत्रफल ३२८६४४० वर्ग मील है, तथा एटलान्टिक महासागर इसे ४६०३ मील तक लम्बाई में स्पर्श करता है। ब्राजील की जनसंख्या ११,००,००,००० है और विशाल नदी अमेजन के बीच बसी नवनिर्मित राजधानी ब्राजीलिया है जिसका उद्घाटन २१ अप्रैल १९६० को किया गया था। यहां के वासी मुख्यतः पोर्तगीजों के वंशज है पर अमेरिकन, इण्डियन और अनेक यूरोपीयन तथा एशियन समुदाय के लोग भी यहां बसते हैं। अन्तर विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न लोग सुन्दर हैं तथा धर्म रोमन कैथोलिक है। वैसे तो ब्राजील का मुख्य नगर **सांओ-पालो** है परन्तु यह नगर औद्योगिक नगर है। वास्तव में रिओ डि जेनरो ही स्वर्ग है।"

मैं यहां पर विश्व विख्यात कोपा कवाना वीच के समीप स्थित होटल कोपा कवाना पैलेस में रुका था। यहां से होटल की खिड़की के वाहर एटलान्टिक महासागर के तरंगों की गरजना वड़ी स्पष्ट सुनाई देती थी। अक्टूवर मास में यहां न अधिक गरमी थी और न हीं सर्दी का आभास होता था परन्तु वादलों के आकाश छाये होने के बाद, कोपा कवाना वीच, जो कि साढ़े तीन मील चौड़ी है, लोगों से भरी थी। लोगों को वर्षा की परवाह नहीं थी वे वालुका पर लेटकर आराम कर रहें थे तथा समुद्र से स्नान कर रहें थे।

नाश्ता करने (ब्रेक फास्ट) मैं होटल के कक्ष में आया। यहां पर ब्रेक फास्ट विशिष्ट ब्राजीलियन था। टोस्ट ब्रेड और कछुओं के अण्डों का आमलेट के साथ विख्यात ब्राजीलियन काफी पीकर वैठा ही था, कि जो सामने नाश्ते हेतु प्लेट में जो आया उसे मैं देखकर चकित हो गया। यह था करीव ५ किलोग्राम का पपीता जो इस प्रकार काटा गया था कि दूर से देखने पर समूचा दिखता था। अपने प्रिय फल को पाकर उसका आनन्द उठा कर, वाकी वचे अंश को प्लेट में छोड़ दिया। तदुपरान्त क्रीम से भरा जैक फ्रुक खाकर मैं टैक्सी लेकर रिओ के दर्शनीय स्थलों की ओर चल पड़ा।

वायुयान से रिओ-डि-जेनरो एयरपोर्ट पर उतरते समय एक शंकु के आकार का पहाड़ और उस पर स्थापित एक ऊँची प्रस्तर प्रतिमा दिखाई पड़ती है। यही वहुचर्चित कोरकोवाडो नामक पर्वत की चोटी है। इसी के ऊपर क्राइस्ट-रि-डिमर की १०० फिट ऊँची विशाल प्रतिमा है। टिकट खरीदकर केबिल कार द्वारा २४०० फिट ऊँची चोटी पर जा पहुँचा और ऊपर जाने पर रिओं के नैनाभिराम समुद्र और वातावरण के दर्शन होते हैं। इस शिखर से देखने पर सर्प की भांति सफेद और विशाल नदी के ऊपर बना, विश्व का द्वितीय विशाल पुल निटेरोई दिखता है। नगर की गगन चुम्बी अटटालिकाएँ समीप के पहाड़ों की चोटियों से स्पर्धा करती दिखती है। इसी चोटी से देखने पर इससे भी ऊँची शुगरलोफ नामक पहाड़ की चोटी दिखती है, जो ६२-६५ फिट ऊँची और गुआना-बारा-खाड़ी में स्थित है।

इस नगर का "वाटेनिकल गार्डेन" दर्शनीय है, जहाँ पर अमेजन नदी के जंगलों में पाये जाने वाले अनेक वृक्ष ओर विचित्र वनस्पतियाँ संग्रहीत है। इनमें से एक कमल का फूल है जो इतना विशाल है कि उस पर एक वच्चा वड़ी आसानी से बैठ सकता है। उसकी तीन फिट चौड़ी पत्ती पर कोई व्यक्ति पानी में खड़ा हो सकता है। इस प्रकार सारा उद्यान विचित्र वनस्पतियों से भरा है। जहाँ पर प्रकृति ने ब्राजील को वनस्पति सम्पदा दी है वहीं पर उसे मणि माणिक्यों से भर दिया है। इसका सर्वश्रेष्ठ प्रर्दशन वहाँ की "मैकिसम" नामक दूकान में देखने को मिलता है। पुखराज, नीलम, अमेथिस्ट की पूरी-पूरी चट्टानें प्रदर्शन के लिए रखी हैं। रूवी, गोमेध, पन्ना, और वैदूर्य का संग्रह अति विलक्षण है। इसी दूकान

में आपको लाखों वर्ष पुराने प्रस्तरीभूत जीवाश्म देखने को मिलेगें। यह सारी दूकान दूर से एक गुफा ऐसी लगती है जिससे मणि माणिक्यों की चमक लोगों को आकर्षित करती हैं। वैसे तो कोपा-कबाना बीच के समीप की अन्य दूकाने भी जवाहरातों से भरी हैं, परन्तु मैकसिम सर्वश्रेष्ठ है।

रिओ में रहने वाले लोग भारत के दिल्ली वालों अथवा लखनऊ वालों की तरह अपने को "कारीओका" कहते हैं। इनके तेवर भी किसी से कम नहीं होते हैं। रिओं वासी मुख्यतः पोर्तगीजों के वंशज है परन्तु इनमें निग्रोरक्त होने के कारण यहां पर होने वाले नृत्य समारोहों में उसका प्रभाव दिखता है।

इसका प्रत्यक्ष प्रभाव रिओ में आयोजित वाले वार्षिक कारनीवाल में देखने को मिलता है, जिसमें सम्बा नर्तकियाँ सचमुच अपनी देह यष्ठि, पीन पयोधरों एवं पृथू नितम्बों से सबका मनमोह लेती हैं। सम्बा नृत्य अत्यन्त उद्दीपक होता है और सामान्यतः विभिन्न नाइट क्लबों में रात्रि के १० बजे से प्रारम्भ होकर प्रातः ४ बजे तक चलता रहता है। इस नृत्य में नर्तकियां कम से कम वस्त्रों को धारण कर अपने तुंग कुचों से कंचुकी हटाकर टूरिस्टों का मन मोहती रहती हैं। यह नृत्य अपने में विलक्षण होता है।

कोपा कबाना होटल में रूक कर रिओ का आनन्द उठाकर ७२ घण्टों बाद ब्राजील की एयर लाइन "वैरिग" से मैं स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुँच गया। पर वैरिग की एयर होस्टेज की यह बात कि रिओ में पुनः न आना रिओ का अपमान करना है इस कारण फिर आइये, मैं भुला न सका। **पर्यटकों के स्वर्ग रिओ-डी-जेनरो में - एक वैज्ञानिक की डायरी से - जनमोर्चा, ३० जून, १९८०।**

— मैड्रिड और रोम की भूली बिसरी यादें —

ईरान की राजनीतिक गतिविथियों में तीव्रता से होते परिवर्तनों को देखते हुए १२ अक्टूबर १९७८को प्रातः काल बैरिग की फ्लाइट से आधे घण्टे की उडान की उपरान्त मैं स्पेन कीं राजधानी मैड्रिड के बाराजास एयरपोर्ट पर पहुँच गया। यहां मेरा होटल रिजर्व था। इस कारण सीधे होटल जाकर थोड़ा आरामकर मैं **मैड्रिड** दर्शन के हेतु तैयार हो गया। मैड्रिड-स्पेन की चर्चा उस महान साम्राज्य की याद दिलाती है जो कभी यूरोप-एशिया से लेकर दक्षिण अमेरिका तक फैला था। मैड्रिड में प्रवास का संस्मरण रोम-इटली के संस्मरणों के साथ गुम्फित है। जहाँ मैं १३ अक्टूबर १९७८ को ओलम्पिया की उडान लेकर ४५ मिनटों में मैड्रिड से रोम के विश्व विख्यात एयर पोर्ट लियोनार्दो-द-विंची पर पहुँच गया था।

"बहुत समय से स्पेन की राजधानी मैड्रिड को देखने की लालसा थी पर समय कम था इस कारण चाहते हुए कि यहाँ की विख्यात चित्र गैलिरियों में न जा सका। टूरिस्ट बस द्वारा रात्रि में मैड्रिड दर्शन करने का निश्चय किया। मेरे होटल का रिर्जवेशन ब्राजील से ही वैरिग-एयर लाइन्स ने करा दिया था। होटल मंहगा था, ४५ डालर प्रतिदिन परन्तु समस्त आधुनिक सुविधाओं से युक्त था। सबसे अविस्मरणीय था उसका शावर, जो बाथ-टब में स्नान के लिए बैठते ही चल जाता था मात्र, गर्म और ठंडे पानी की मात्रा को नियन्त्रित करना पड़ता था। यात्रा की सारी थकान दूर कर रात्रि में ८ बज़े बस द्वारा नगर दर्शन पर निकला। रात्रि के प्रोग्राम में विशेष था, **फ्लैमिंगों** नृत्य जो विशेष तलकक्षों जिन्हें टाब्लाओं कहते हैं, में होता है। स्टेज लकड़ी का बना होता है और प्राचीनता दर्शाने के लिए बैठने की बेन्चें भी लकड़ी की होती हैं। जाड़ों का प्रारम्भ था इस कारण टूरिस्टों हेतु सारा कक्ष गर्म रख़ा गया था। करीब ८-१० नर्तकियाँ हर रंग की पोशाक में मंच पर आती और कोरस में गातीं तथा नृत्य करती थीं। सभी के एक साथ नृत्य करने पर इन्द्र धनुष की सी छटा दिखती थीं। मुझे तो इस नृत्य को देखकर अरव नर्तकियों की याद आयी जिनका नृत्य मैंने इजराइल की यात्रा में अरब रेस्ट्रा में देखा था। वास्तव में फ्लैमिंगों

नृत्य पर मूर नृत्य का प्रभाव हैं, जो स्पैनिश लोक नृत्यों के रंग में रंगकर अधिक रंगीन हो गया है। नृत्य के बीच भोजन भी था जो विशुद्ध स्पैनिश था। यह नृत्य १२ बजे रात्रि तक चला और इसके बाद हम सभी टूरिस्ट नगर दर्शन हेतु बस पर सवार हो गये। गाइड धारा प्रवाह अंग्रेजी में हर स्थल की विशेषता बताता और प्रत्येक भवन का इतिहास भी। इतिहास की इतनी चर्चा हुई कि मात्र जनरल फ्रान्कों के भवन की याद है बाकी सब विस्मृत हो गया। समय तेजी से बीत रहा था इस कारण चाहते हुए भी विख्यात बुलफायटिंग न देख सका और रात्रि शयन कर दूसरे दिन ओलम्पिया इटलियन एयर वेज की फ्लाइट से ४५ मिनट में रोम पहुँच गया ओर पूर्व निर्धारित होटल "हालीडेइन" में जा पहुँचा।

इटैलियन टैक्सी ड्राइवर पैसे ऐंठने में माहिर और झगड़ालू होते हैं, इस तथ्य का मुझे पता था। इस कारण सावधानी से जर्मन भाषा में बात कर टैक्सी ली और एयर पोर्ट पर ही डालर ट्रैव्लर चेकों को इटैलियन लीरा में परिवर्तित कराकर यात्रा के लिए तैयार हो गया। होटल रोम से २० किलोमीटर दूर था परन्तु सुन्दर कमरों और फ्री सर्विस होने के कारण इसका किराया २३ डालर प्रतिदिन का बुरा नहीं था। यहीं से बस चलती थीं रोम दर्शन कराने के लिए। इस कारण कमरे में सामान रख कर तथा जेब में पासपोर्ट और आवश्यक धन रखकर रोम की यात्रा पर चला। रोम में हर घटना सम्भव है। जेब काटने से लेकर पर्स छीनना और हत्या कर देना सामान्य है। इस कारण मैं अधिक सतर्क था परन्तु मेरे साथ जो इराकी दम्पत्ति थे वह मुझसे भी अधिक त्रस्त और भयभीत थे। रात्रि का रोम विचित्र लगा। विशाल शहर और सकरी गलियों के बीच कैफे, रेस्ट्रा, डिस्कों ओर उन्मुक्तता, एक विचित्र अनुभूति पैदा करती थी। रोम में रोमन की भाँति रहो-सुना था पर इसे कार्य रूप में सम्पादित करना कठिन था। पिज्जा और सोरेन्टों नामक मदिरा लेकर जब कुछ स्वस्थ हुआ तो समीप के टूरिस्ट आफिस की ओर चला। सूचनायें एकत्र कर, इटैलियन बालाओं की सुन्दरता निरखता, कैफे में बैठकर मैं लोगों से बाते करने का प्रयास करने लगा। टूरिस्ट बस पर पुनः सवार होकर रोम के भग्न भवनों और वीथिकाओं को देखता हुआ अलबर्टो मोरविया की "विमेन-आफ रोम एवं रोमन टेल्स" की नायिकाओं की तुलना इटेलियन बालाओं से करता हुआ जब होटल वापस पहुँचा तो थक कर चूर हो गया था। दूसरे दिन प्रातः रोम विलक्षण लगा और हमारी टूरिस्ट बस विला-बोर्जी से लेकर **रॉयल पैलेस** और वहाँ से **शनिश्चर के मंदिर** तथा **मूसा की विशाल माइकेलेंजिलों द्वारा बनायी गयी प्रतिमा** को देखता हुआ **कैपिस-सिस्टियस-का पिरामिड, सेन्ट पाल का चर्च,** रोमन फोरम एवं प्राचीन **ग्लेडिएटरस की संग्राम भूमि का ऐम्फीथियेटर** एवं उसकी संरचना को देखता, उसके निर्माण के बारे में पूछता होटल आ गया। रोम एक दिन में नहीं बना है।

रोम एक दिन में नहीं बना है-यह तथ्य हैं। इसके देखने के लिए महीनों चाहिए। इसकी चित्र वीथिकाओं और पोप-पाल का वेटिकन भी दर्शनीय है, जहाँ मैं गया था। पर सबसे विचित्र लगी रोम में बढ़ती हिंसा। मेरे आँखों के सामने ही २ लड़कियों द्वारा एक महिला का पर्स लेकर भाग जाना और मोटर साइकिल पर सवार २ किशोरों द्वारा टूरिस्टों का कैमरा छीनना तथा पुलिस की असहायता एवं ट्रैफिक का कदम-कदम पर नियमों का उल्लंघन करना, रोम की सामान्य गतिविधियों का एक अंग सा है। रोम में यह सदैव होता ही रहा है और इसी भाँति चलता रहेगा।" **मैड्रिड और रोम की भूली बिसरी यादें-एक वैज्ञानिक की डायरी से - जनमोर्चा ७ जुलाई १९९०"।**

इस अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा की समाप्ति १४ अक्टूबर १९७८ को ईरान एयर की उड़ान से प्रातःकाल १५ अक्टूबर १९७८ को तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर पहुँचने के बाद हो गयी। यहां से उसी दिन

∗∗समाप्त ∗∗